संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

3

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-3 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गास्पल हाल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति**

एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1. इब्राहीम और स्वर्गदूत 1
2. हाजिरा और इश्माएल 4
3. इसहाक का विवाह 7
4. याकूब और लाबान 11
5. याकूब कैसे इस्राएल बना 14
6. फसह 17
7. पीतल का सर्प 20
8. दस आज्ञाएँ 23
9. सोने का बछड़ा 26
10. छड़ी-जिसमें फूल खिले 28
11. मूसा की मृत्यु 30
12. गिदोन 33
13. शिमशोन 36
14. शाऊल और दाऊद 39
15. योनातन 42
16. मपीबोशेत 45
17. अबशालोम 47
18. अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता 50
19. कर्मेल पर्वत पर एलिय्याह 53
20. हामान 56
21. गेहजी 59

22. नाबोत 62
23. सामरिया में दुर्भिक्ष.. 65
24. बेलशस्सर का भोज 68
25. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई.................................... 70
26. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु... 72
27. पापिनी स्त्री 74
28. दाख की बारी में मज़दूर 76
29. राजा के पुत्र का विवाह 78
30. दस कुँवारियाँ 80
31. तोड़े 82
32. क्रूसीकरण 84
33. हनन्याह और सफीरा 87
34. स्तिफनुस.. 89
35. फिलिप्पुस और खोजा.. 91
36. तरसुस का शाऊल.. 94
37. कुरनेलियुस 96
38. लुदिया 99
39. फिलिप्पी का दारोगा 101
40. तीमुथियुस 103

पाठ 1

इब्राहीम और स्वर्गदूत

उत्पत्ति 18:1-15

परिचय :

हम कितने खुश होते हैं, जब लोग हमसे भेंट करने आते हैं! हम प्रसन्नतापूर्वक उनका अभिवादन करते हैं, उन्हें अपने घर में आमंत्रित करते हैं, और खुशी से उनसे बातचीत करते हैं। उन्हें देने के लिए स्वादिष्ट भोजन का प्रबंध भी अवश्य करते हैं। क्या आप जानते हैं कि हमारे अतिथि सत्कार से परमेश्वर भी बहुत प्रसन्न होते हैं? (रोमियों 12:13)। बाइबल में ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जब लोग अपने प्रियजनों से मिलने गए और उनका अतिथि सत्कार हुआ। उत्पत्ति की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार इब्राहीम ने उन व्यक्तियों का स्वागत किया जो उससे भेंट करने आए।

पाठ :

इब्राहीम अपने परिवार समेत एक तंबू में रहता था, मकान में नहीं। एक दिन जब वह तंबू के द्वार पर बैठा था, तब उसने कुछ दूर तीन पुरुषों को खड़े देखा। वह उनसे मिलने दौड़ कर गया, और झुककर उनका अभिवादन किया। देखो, वह कितना नम्र था। आप अपने शिक्षकों का अभिवादन कैसे करते हैं? क्या सिर को थोड़ा सा झुकाकर नहीं? ऐसा करना विनम्रता है। यह नम्रता को प्रदर्शित करता है। इब्राहीम उनकी तरफ भागा, और झुककर उनके अगुए को ''मेरे प्रभु'' कहा।

इब्राहीम एक अमीर पुरुष था और उसे एक अजनबी को इस प्रकार संबोधित करने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु इब्राहीम एक नम्र पुरुष था, और अपने सभी अतिथियों के प्रति उसका व्यवहार आदरपूर्ण था।

उसने कहा, ''हे प्रभु, अपने दास के पास से चले न जाना, आपके पाँव धोने के लिए पानी लाता हूँ। कृपा करके वृक्ष के तले विश्राम करें,

और मैं आपके लिए भोजन ले आता हूँ।''

अत: वे लोग वृक्ष की छाँह में बैठ गए और इब्राहीम सारे इंतजाम करने के लिए शीघ्रता से तंबू में गया। आप क्या सोचते हैं कि उसने मेहमानों को क्या दिया होगा? उसने अपनी पत्नी से रोटी बनाने को कहा, जो उसने दूध और मक्खन के साथ उनको परोसा।

एक सेवक ने माँस पकाया। इब्राहीम ने स्वयँ अतिथियों को भोजन परोसा। परन्तु इब्राहीम नहीं जानता था कि वे अतिथि वास्तव में परमेश्वर के स्वर्गदूत थे। नए नियम में लिखा है कि इब्राहीम ने अतिथियों का सत्कार किया, यह जाने बगैर ही कि वे स्वर्गदूत थे।

भोजन करके, विश्राम करने के पश्चात् स्वर्गदूतों ने इब्राहीम से बातें कीं। उन्होंने इब्राहीम से उसकी पत्नी सारा के बारे में पूछा, जो तंबू के भीतर थी, और अतिथियों का स्वागत करने बाहर नहीं आई थी। स्वर्गदूत ने सारा को आशीष दी और कहा, ''अगले वर्ष इसी समय सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा''।

यह सुनकर सारा हँसी क्योंकि वह नब्बे वर्ष की हो चुकी थी, और उसकी कोई संतान नहीं थी। स्वर्गदूत ने पूछा, ''सारा क्यों हँसी? क्या परमेश्वर के लिए कोई काम कठिन है? नियम समय पर मैं वापस आऊँगा, और सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा।''

तत्पश्चात् अतिथि तुरंत ही चले गए और रिवाज़ के अनुसार इब्राहीम उनके साथ कुछ दूर तक चला। रास्ते में परमेश्वर ने उससे बात की। आप क्या सोचते हैं कि परमेश्वर ने क्या कहा होगा? वह अत्यंत ही महत्वपूर्ण संदेश था। परमेश्वर दो शहरों का नाश करने वाले थे, क्योंकि उनमें रहने वाले मनुष्य बहुत दुष्ट थे। परमेश्वर उन स्वर्गदूतों का भी विनाश करते हैं जो उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते। परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हैं उनको परमेश्वर आशीष देते हैं।

याद करें :

इब्रानियों 13:1-2 भाईचारे की प्रीति बनी रहे। अतिथि सत्कार करना न भूलना, क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।

प्रश्न :

1. इब्राहीम ने अपने अतिथियों का स्वागत कैसे किया?
2. इब्राहीम ने अपने अतिथियों को भोजन में क्या दिया?
3. परमेश्वर ने इब्राहीम को कौन सी दो महत्वपूर्ण बातें बताई?
4. हमें परमेश्वर की आज्ञा क्यों माननी चाहिए?

पाठ 2

हाजिरा और इश्माएल

उत्पत्ति 12:20; 13:1; 16:1-15

परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा, कि परमेश्वर ने इब्राहीम से वायदा किया। क्या आपको याद है कि वह वायदा क्या था?, वह वायदा यह था, कि इब्राहीम की पत्नी सारा को एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह वायदा पूरा हुआ और सारा को एक बेटा हुआ- इसहाक।

इब्राहीम का एक और चौदह वर्षीय पुत्र था जिसका नाम इश्माएल था और उसकी माता का नाम हाजिरा था। आज हम हाजिरा और इश्माएल के बारे में सीखेंगे।

पाठ :

इब्राहीम अपने पशुओं के साथ जगह-जगह घूमता था और तंबुओं में रहता था। एक समय कनान में अकाल पड़ा, तब वह अपने परिवार और पशुओं को लेकर मिस्र देश को चला गया क्योंकि वहाँ अन्न और पानी उपलब्ध था। सारा ने हाजिरा नाम एक मिस्री सेविका रख ली जो बाद में उनके साथ कनान देश में आ गई।

यह हाजिरा के लिए एक आशीष की बात थी, कि वह एक ऐसे परिवार में आई थी जो मूर्तियों से नहीं बल्कि जीवित परमेश्वर से प्रार्थना करने वाला था। इस प्रकार उसने भी परमेश्वर के बारे में सीखा।

समय बीतता गया। इब्राहीम एक अमीर व्यक्ति बन गया। उसके पास अनेक दास दासियाँ, भेड़ बकरियों और गाय बैलों के झुण्ड हो गए। फिर भी उसके जीवन में एक बड़ा दुख था। उसकी पत्नी सारा के कोई संतान नहीं थी। बच्चों, क्या आप जानते हैं कि आप अपने माता-पिता के जीवन में कितनी खुशियाँ लाते हैं?

जब सारा बूढ़ी होने लगी, उसने बच्चा पाने की आस छोड़ दी और

एक योजना बनाई। उसने इब्राहीम से कहा कि हाजिरा को भी अपनी पत्नी बना ले। इब्राहीम ने ऐसा ही किया। हाजिरा को जब पता चला कि वह माँ बनने वाली है, तब उसको घमंड हो गया और वह अपनी मालकिन को तुच्छ समझने लगी। सारा बहुत क्रोधित हुई और हाजिरा को दुख देने लगी। हाजिरा घर से भाग गई, परंतु जंगल में एक स्वर्गदूत ने उसके पास आकर उसे तसल्ली दी। याद रखो, जब हमें बहुत दुख होता है तब परमेश्वर हमारी सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहते हैं। स्वर्गदूत ने हाजिरा से कहा, ''अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह।'' स्वर्गदूत ने उससे वायदा करके कहा, ''तू पुत्र जनेगी, और उसका नाम इश्माएल रखना, जिसका अर्थ है, 'परमेश्वर सुनता है', और परमेश्वर उसको एक बड़े राष्ट्र का पिता बनाएगा।'' वायदा पूरा हुआ, और इश्माएल के वंशजों से एक महान राष्ट्र बन गया।

जब सारा ने इसहाक को जन्म दिया, तब इश्माएल चौदह वर्ष का था। इब्राहीम के दोनों पुत्र एक ही तंबू में रहे, परन्तु उनके बीच समस्या हो गई। इश्माएल, इसहाक को परेशान करने लगा, जिससे सारा क्रोधित हो गई और उसने हाजिरा और इश्माएल को तंबू से निकाल देने के लिए दबाव डाला। इब्राहीम को यह बात बुरी लगी, परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा कि वह सारा की बात मान ले! इब्राहीम ने हाजिरा को बुलाकर उसे भोजन और पानी देकर पुत्र के साथ विदा कर दिया।

हाजिरा और इश्माएल चले गए और बेर्शेबा के जंगल में भटकने लगे। उनके थैली का पानी समाप्त हो गया, और ऐसा लगा कि प्यास के मारे इश्माएल की मृत्यु हो जाएगी। हाजिरा चिल्ला-चिल्ला कर रोई और परमेश्वर से प्रार्थना की। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनकर उसे सांत्वना देने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा। स्वर्गदूत ने उसे परमेश्वर का वायदा स्मरण दिलाया कि उसका पुत्र एक महान राष्ट्र का प्रमुख होगा। फिर स्वर्गदूत ने उसे जल का एक कुआँ दिखाया। हाजिरा और इश्माएल ने जंगल में रहना सीख लिया, और इश्माएल एक धनुर्धारी बन गया। कुछ समय के पश्चात् उसने अपनी माता के देश की एक स्त्री से विवाह कर लिया। बच्चों क्या आपको उस देश का नाम याद है?

उसके एक पुत्री और बारह पुत्र उत्पन्न हुए। आज के अरब देश के

अधिकांश लोग इश्माएल के वंशज हैं। इस प्रकार हाजिरा से किया हुआ परमेश्वर का वायदा पूरा हुआ। इसी प्रकार का परमेश्वर का वायदा भी पूरा हुआ, जो उसने अपने चुने हुओं से किया जिसके विषय में हम बाद में सीखेंगे।

याद करें :

गलातियों 5:22 आत्मा का फल, प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है।

प्रश्न :

1. इब्राहीम के पहले पुत्र का क्या नाम था?
2. इब्राहीम का वायदे का पुत्र कौन था?
3. हाजिरा क्यों भाग गई थी?
4. हाजिरा वापस इब्राहीम के तंबू में क्यों लौट आई?
5. इब्राहीम ने हाजिरा और इश्माएल को बाद में क्यों भेज दिया?
6. जंगल में हाजिरा और इश्माएल के साथ क्या हुआ।

पाठ 3

इसहाक का विवाह

उत्पत्ति 24

परिचय :

हम सब विवाह समारोह में जाना पसंद करते हैं ना? बाइबल में हम अनेक विवाहों के बारे में पढ़ते हैं। जब हमारे प्रभु इस संसार में थे, तब वे गलील के काना में एक विवाह में गए थे। पिछले पाठ में हमने सीखा कि इब्राहीम के पुत्र इश्माएल ने एक मिस्री स्त्री से विवाह किया। अब हम इसहाक के विवाह के बारे में सीखेंगे।

पाठ :

इसहाक बड़ा होकर एक योग्य पुरुष बन गया, और रिवाज के अनुसार इब्राहीम ने उसके लिए एक पत्नी लाने का निर्णय किया। इब्राहीम चाहता था कि इसहाक की तरह उसकी पत्नी भी जीवते परमेश्वर की आराधना करने वाली हो। इब्राहीम उन लोगों के बीच में रहता था, जो अपने ही हाथ के बनाए मूरतों की पूजा करते थे। एक बात और थी। परमेश्वर की बुलाहट सुनकर इब्राहीम ने अपनी जन्मभूमि छोड़ दी थी और कनान में तंबुओं में रहता था। यदि वह अपने पुत्र के लिए अपने कुटुंबियों में से पत्नी लाता, तो संभव है, कि वो इसहाक को मजबूर करते कि वह अपने पिता की जन्मभूमि में वापस लौट कर बस जाए।

जिस व्यक्ति ने परमेश्वर की बुलाहट को सुना है, वह ऐसा कभी नहीं करेगा। इस कारण इब्राहीम ने निश्चय किया कि वह अपने कुटुंबियों में से इसहाक के लिए ऐसी लड़की लाएगा, जो अपने लोगों को छोड़कर आने, और अपने पति और उसके लोगों के साथ तंबुओं में रहने के लिए तैयार हो। परमेश्वर की बुलाहट को सुनने के पश्चात्, अब वह अपनी जन्मभूमि में लौटना नहीं चाहता था। एक ऐसी युवती को ढूँढ़ना आसान कार्य नहीं था, परन्तु इब्राहीम को विश्वास था कि परमेश्वर उपाय करेंगे। उसने अपने विश्वस्त सेवक एलीएजेर को भेजा कि इसहाक

के लिए एक दुल्हन ढूँढ़कर लाए।

एलीएजेर दस ऊँटों का काफिला और कनान के उत्तम-उत्तम पदार्थों में से कुछ-कुछ लेकर चला। अनेक दिनों की यात्रा के पश्चात् वे मेसापोटामिया पहुँचे, जहाँ इब्राहीम का भाई नाहोर रहता था। वे नगर के बाहर रुक गए। उन दिनों में प्रत्येक शहर की शहरपनाह के बाहर एक सार्वजनिक कुआँ होता था, जहाँ शाम के समय उस शहर की स्त्रियाँ पानी भरने आती थीं। कुएँ के पानी तक नीचे जाने के लिए चौड़ी सीढ़ियाँ हुआ करती थीं और स्त्रियाँ सीढ़ियाँ उतरकर पानी भरती थीं। एलीएजेर कुएँ पर रुका क्योंकि वह और उसके ऊँट प्यासे थे। उसको यह आशा भी थी कि जल भरने आने वाली युवतियों में से उसे इसहाक के लिए योग्य लड़की मिल जाएगी।

सही युवती का चुनाव कैसे हो? उसने सबसे अच्छा कार्य किया कि वहीं खड़े-खड़े प्रार्थना की, ''हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी इब्राहीम पर करुणा कर।'' उसने परमेश्वर से विनती की, कि उसे इसहाक के लिए सही लड़की दिखा दे। उसने परमेश्वर से विनती की, कि ''जिस कन्या से मैं पानी माँगूं और वह मुझ से कहे, कि पी ले, फिर मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी, वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिए ठहराया हो।''

तभी नाहोर की पोती घड़ा लेकर आई और कुएँ में सोते के पास उतर गई, और अपना घड़ा भर कर ऊपर आई।

एलीएजेर ने उससे पानी माँगा, तो उसने उसे पानी पिलाया और कहा, कि ''मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी।'' यह कह कर उसने अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेल दिया और कुएँ पर दौड़ गई।

एलीएजेर अचम्भे से उसको देखकर सोचता रहा कि क्या यह युवती इब्राहीम के कुटुम्ब की है, और इसहाक के लिए ठहराई हुई है। जब ऊँट पी चुके तब उसने उस कन्या से उसके पिता का नाम पूछा। उसने कहा, ''मैं नाहोर के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ, हमारे यहाँ चारा और रहने के लिए जगह भी है।'' एलीएजेर ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत

किया, जिसने उसे अपने स्वामी के परिवार तक पहुँचाया था। उसने रिबका को सोने की नथ और कंगन दिए।

वह दौड़कर घर गई और सब बातों का वर्णन किया, तब उसका भाई लाबान इब्राहीम के सेवक का स्वागत करने के लिए कुएँ पर आया।

घर पहुँचकर एलीएज़ेर और उसके साथियों के लिए भोजन परोसा गया, परन्तु भोजन से पहले वह अपने आने का उद्देश्य उनको बताना चाहता था। उसने उन्हें बताया कि किस तरह परमेश्वर ने उसे उन लोगों तक पहुँचाया। उनको विश्वास हो गया कि रिबका के लिए परमेश्वर की यही इच्छा है, और तुरंत ही उसके माता-पिता और भाई इस विवाह के लिए सहमत हो गए। तब एलीएजेर ने प्रार्थना सुनने, और उसका उत्तर देने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया। क्या आप परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं जब वह आपकी प्रार्थना सुनते हैं? एलीएजेर ने रिबका को बहुमूल्य आभूषण और वस्त्र दिए और उसके माता-पिता और भाई को भी अनमोल उपहार दिए। तत्पश्चात सबने भोजन किया और रात वहीं बिताई।

अगली सुबह एलीएजेर ने वापसी यात्रा के लिए जल्दी की, परन्तु रिबका की माँ और भाई चाहते थे कि रिबका दस दिन और उनके साथ रहे। एलीएजेर इसके लिए तैयार नहीं हुआ, इसलिए उन्होंने रिबका से पूछा। वह तुरंत एलीएजेर के साथ जाने के लिए तैयार हो गई। उसके माता पिता ने उसे आशीर्वाद देकर एलीएजेर के साथ विदा किया।

कई दिनों की यात्रा तय करने के पश्चात् वे एक मैदान में पहुँचे जहाँ एक जवान ध्यान करने निकला था। एलीएजेर ने रिबका को बताया कि वही इसहाक है। वह तुरंत ऊँट पर से उतरी और घूँघट कर लिया। इसहाक ने उसका स्वागत किया और उसे अपनी माता सारा के तंबू में ले गया। रिबका का विवाह नए नियम के सत्य को प्रकट करता है। जिस प्रकार एलीएजेर रिबका को इसहाक के पास लाया उसी प्रकार पवित्र आत्मा कलीसिया का मार्ग दर्शन करके उस स्वर्गीय दूल्हे तक पहुँचाते हैं जो प्रभु यीशु मसीह हैं।

याद करें :

2 कुरिन्थियों 6:14 अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो।

प्रश्न :

1. इब्राहीम ने इसहाक की पत्नी होने के लिए कनानी लड़की क्यों पसंद नहीं की?
2. रिबका के परिवार के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. कौन एलीएजेर का स्वागत करके अपने घर ले गया?
4. नाहोर के घर में पहला भोजन करने से पहले, एलीएजेर ने परमेश्वर की आराधना क्यों की?
5. इसहाक शाम के समय मैदान में क्या कर रहा था?

पाठ 4

याकूब और लाबान

उत्पत्ति अध्याय 29-31

परिचय :

इसहाक के दो पुत्र थे, एसाव और याकूब। जब वे बड़े हुए तब याकूब ने चालाकी से अपने बड़े भाई से पहलौठे का स्थान और पिता की आशीष को अपना कर लिया। परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वायदे दिए थे वह सब याकूब को देते हुए इसहाक ने उसे आशीर्वाद दिया। इस कारण एसाव क्रोध से भर गया। रिबका को डर था कि एसाव याकूब को जान से मार देगा इसलिए उसने याकूब को अपने भाई लाबान के घर पद्दनराम भेज दिया। वह भी नहीं चाहती थी कि याकूब कनानी स्त्रियों में से अपने लिए पत्नी ले।

पाठ :

याकूब ने कनान छोड़ दिया। रास्ते में परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर उससे वायदा किया, कि इब्राहीम से किया वायदा उसे और उसकी संतानों को प्राप्त होगा। वह चलते-चलते पद्दनराम पहुँचा। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया जहाँ चरवाहे अपने पशुओं को पानी पिलाने आया करते थे। उसने चरवाहों से पूछा कि क्या वे लाबान को जानते हैं। उन्होंने उसे उत्तर दिया, ''हाँ हम जानते हैं, और देखो उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लेकर आ रही है।'' राहेल के आने पर याकूब ने उसे बताया कि वह रिबका का पुत्र है। वर्षों पहले जिस प्रकार रिबका कुएँ पर से भागकर घर गई थी, उसी प्रकार राहेल भी भागकर अपने घर गई और अपने पिता को समाचार दिया।

लाबान आकर याकूब को अपने घर ले गया। याकूब लाबान के लिए अच्छा सहायक सिद्ध हुआ क्योंकि वह भेड़ों को चराना और घर चलाना जानता था। लाबान याकूब को अपने साथ रखना चाहता था, इसलिए उसने याकूब से पूछा कि बदले में उसे क्या चाहिए। याकूब ने कहा कि

अपनी बेटी राहेल को पत्नी होने के लिए दे देना। लाबान इस शर्त पर मान गया कि राहेल के बदले वह सात वर्ष उसकी सेवा करेगा।

याकूब ने सात वर्ष की सेवा के पश्चात् विवाह के लिए रिबका को माँगा। लाबान तैयार हो गया। उसने उस स्थान के सब लोगों को बुलाकर रात को विवाह करा दिया और सबको भोज दिया। सुबह याकूब को पता चला कि उसे पत्नी होने के लिए लिआ: दी गई थी, परन्तु वह राहेल से प्रेम करता था। याकूब ने अपने भाई और पिता को धोखा दिया था, और अब उसने धोखा खाया। यदि हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमसे ईमानदार रहें, तो हमें भी दूसरों के प्रति हर एक बात में ईमानदार रहना चाहिए।

याकूब ने कड़वाहट से भरकर लाबान से शिकायत की, परन्तु लाबान ने शांत रहकर उसे उत्तर दिया कि ''हमारे यहाँ ऐसा रिवाज नहीं है कि बड़ी से पहले छोटी का विवाह कर दें।'' वह राहेल को भी उसे पत्नी होने के लिए, देने को तैयार था, परन्तु उससे पहले उसे लिआ: का सप्ताह पूरा करना था, जिस में दूल्हे और दुल्हन का आनंदोत्सव मनाया जाता है। राहेल के बदले याकूब को और सात वर्ष लाबान की सेवा करनी थी। याकूब राहेल से इतना प्रेम करता था कि उसने शर्त मान ली और राहेल को पत्नी बना लिया।

चौदह वर्ष लाबान के लिए कठिन सेवा करते हुए बीत गए, फिर और छह वर्ष याकूब ने भेड़-बकरियों के लिए सेवा की। अब तक याकूब के एक पुत्री दीना और ग्यारह पुत्र उत्पन्न हुए। इन में सबसे छोटा यूसुफ था। सबसे छोटा बिन्यामीन बाद में कनान में उत्पन्न हुआ। याकूब वापस कनान जाना चाहता था, परन्तु लाबान उसे जाने देना नहीं चाहता था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर ने याकूब के कारण ही उसे आशीष दी है। याकूब की धन-संपत्ति इतनी बढ़ गई थी, कि लाबान के पुत्र शिकायत करने लगे। तब परमेश्वर ने याकूब से कनान लौट जाने को कहा।

लाबान भेड़ों का ऊन कतरने के लिए कहीं चला गया, तब याकूब ने अपनी पत्नियों, बच्चों और पशुओं के साथ उस स्थान को छोड़ दिया। जब लाबान को पता चला तब उसने अपने संग लोगों को लेकर याकूब

का पीछा किया, परन्तु परमेश्वर ने लाबान से कहा कि वह याकूब को कुछ न कहे। फिर भी लाबान ने उसे चुपचाप निकल जाने के लिए डाँटा। फिर वहाँ उन्होंने वाचा बाँधी कि वे एक दूसरे को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे। उन्होंने यह कहकर उस स्थान का नाम मिज़पा रखा कि ''यहोवा मेरी और तेरी देखभाल करता रहे।'' अपने मार्ग में आगे बढ़ने से पहले याकूब ने मेलबलि चढ़ाया और लाबान पद्दनराम को लौट गया।

याद करें :

भजन संहिता 146:5 क्या ही धन्य वह है, जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, और जिसका भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है।

प्रश्न :

1. याकूब पद्दनराम क्यों गया?
2. याकूब सबसे पहले किस स्थान पर राहेल से मिला था?
3. राहेल को पत्नी के रूप में पाने के लिए याकूब ने क्या वायदा किया?
4. लाबान ने किस प्रकार याकूब को धोखा दिया?
5. अपने पशुओं के लिए याकूब ने कितने वर्ष लाबान की सेवा की?
6. लाबान ने याकूब को क्यों शांति से जाने दिया?

पाठ 5

याकूब कैसे इस्राएल बना

उत्पत्ति 32

परिचय :

हम सब का अपना एक नाम है। अक्सर हमारा नाम हमारे चरित्र को या व्यक्तित्व को प्रकट नहीं करता, फिर भी अक्सर नाम का कुछ अर्थ होता है। हो सकता है कि घर में हमारे दुलार का एक नाम हो, और स्कूल में कुछ और नाम हो, और हमारे मित्र हमें कुछ और ही बुलाते हों। अत: एक ही व्यक्ति के दो या तीन नाम हो सकते हैं। यदि कभी किसी को अपना नाम पसंद न हो तो बड़े होने पर अपना नाम बदल लेते हैं। आज हम याकूब के बारे में सीखेंगे जो किसी और नाम से जाना जाता है। याकूब का अर्थ है ''जगह लेने वाला'' और यह उसके बचपन के जीवन के अनुसार था, परन्तु वह समय आया, जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि उसको नया नाम देने की आवश्यकता है। उसके बारे में आज हम सीखेंगे।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि याकूब और लाबान शांति से अलग हो गए और याकूब कनान के लिए चला। क्या आपको याद है कि बीस वर्ष पहले उसने कनान क्यों छोड़ा था? क्योंकि वह एसाव से डरा हुआ था। बीस वर्ष बाद भी उसे डर था कि यदि एसाव उससे मिलेगा तो क्या करेगा। उसे डर था कि एसाव उसकी पत्नियों, बच्चों, सेवकों और पशुओं को हानि पहुँचाएगा। इसलिए याकूब ने एसाव के पास संदेश भेजा कि वह उससे मिलने आ रहा है। एसाव ने वापस संदेश भेजा कि वह 400 लोगों को लेकर उससे मिलने आ रहा है। याकूब बहुत भयभीत हो गया और उसने एसाव के लिए भेड़ों और पशुओं की भेंट अपने आगे भेज दी।

उस रात याकूब ने अपनी पत्नियों, बच्चों, सेवकों और पशुओं को

नदी के उस पार भेज दिया और स्वयं नदी के इस पार रहकर प्रार्थना की। जब हमें किसी भी बात का भय हो, तब हमें भी याकूब की तरह परमेश्वर के निकट आना चाहिए, और परमेश्वर हमारी सहायता करेंगे। जब याकूब अकेला रह गया, तब एक पुरुष आया और भोर होने तक उससे मल्लयुद्ध करता रहा। वास्तव में वह परमेश्वर का एक दूत था, फिर भी वह याकूब पर प्रबल न हो सका। इसलिए उसने याकूब की जाँघ की नस को छुआ, और उससे कहा, ''मुझे जाने दे, क्योंकि सुबह होने वाली है।''

परंतु याकूब ने कहा, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।'' देखो बच्चो, हमें परमेश्वर से अच्छी वस्तुएं माँगने का अधिकार है क्योंकि हम उनकी संतान हैं। जब हम किसी बात की सच्ची चाहत रखेंगे तब परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर देंगे। स्वर्गदूत ने कहा, ''तेरा नाम अब से याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमशेवर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।'' फिर उसने याकूब को आशीर्वाद दिया।

जब भी हमारे जीवन में समस्या आती है, या कोई चिन्ता होती है तब हमें परमेश्वर के और करीब आना चाहिए। यदि हम पूर्ण रूप से परमेश्वर पर विश्वास करेंगे और उनके निर्णयों की प्रतीक्षा करेंगे, तब वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे और हमें आशीष देंगे। याकूब को एक सुंदर नाम मिला। इस्राएल का अर्थ है, ''परमेश्वर का योद्धा या राजकुमार'' याकूब के वंशज आज भी इस्राएल नाम से जाने जाते है। परमेश्वर के वायदे के अनुसार इस्राएल एक महान राष्ट्र बन गया, और भविष्य में वह और भी महान होगा।

याद करें :

प्रकाशितवाक्य 2:17 जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा, और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा।

प्रश्न :

1. याकूब, एसाव से क्यों डरा हुआ था?
2. याकूब ने किसके साथ मल्लयुद्ध किया?
3. मल्लयुद्ध का परिणाम क्या था?
4. याकूब और इस्राएल नामों के क्या अर्थ हैं?
5. हम परमेश्वर की आशीष कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

पाठ 6

फसह

निर्गमन 12

''इम्मानुएल के लहू से,
एक सोता भरा है,
जो पापी उसमें लेवे स्नान,
रंग पाप का छूटता है।
    हे मेम्ने तेरे रक्त का गुण,
    कभी न मिटेगा,
    और तेरी मंडली का बखान,
    सदा तक रहेगा।''

परिचय :

परमेश्वर ने याकूब से वायदा किया था, कि उसके लोग एक महान राष्ट्र बनेंगे। परन्तु एक समय ऐसा आया जब इस्राएल की संतान गुलाम बन गए। क्या आप जानते हैं कि यह कहाँ हुआ? यह मिस्र में हुआ।

कनान देश में भयंकर अकाल पड़ा इस कारण याकूब और उसके पुत्र परिवार समेत मिस्र देश में चले गए, जहाँ भरपूर अन्न उपलब्ध था। याकूब और उसके पुत्रों की वहीं मृत्यु हो गई, परन्तु 400 वर्षों में उनके वंशज हजारों हो गए। जब उनका वायदे के देश कनान लौटने का समय हुआ, तब परमेश्वर ने लोगों की अगुआई के लिए मूसा को भेजा। मिस्र का राजा, जिन्हें फिरौन कहा जाता था, वह इस्राएलियों को जाने नहीं देता था, अतः परमेश्वर ने मिस्र पर नौ विपत्तियाँ भेजीं, जैसे–मेंढ़क, कुटकियाँ, ओले और टिड्डियाँ। परन्तु उसके बावजूद फिरौन का मन नहीं बदला। तब परमेश्वर ने कहा कि एक और विपत्ति मैं फिरौन और मिस्र पर डालूँगा, और तब वह तुम लोगों को जाने देगा। आज हम उसी दसवीं विपत्ति के बारे में सीखेंगे।

पाठ :

परमेश्वर ने कहा कि वे आधी रात को, नाश करने वाले दूत को भेजेंगे जो मिस्र देश से होकर निकलेगा, और मनुष्यों और पशुओं के पहलौठे मारे जाएंगे। वह रात मिस्रियों के लिए बड़े दुख की, परन्तु इस्राएलियों के लिए छुटकारे की रात होगी। और वे एक महान जाति बन जाएंगे। परमेश्वर ने कहा, ''आबीब का महीना तुम्हारे लिए वर्ष का पहला महीना होगा।'' हिन्दी कैलेंडर का पहला महीना चैत है, और अंग्रेजी कैलेंडर का पहला महीना जनवरी है। उस दिन से इस्राएलियों के लिए वर्ष का पहला महीना आबीब ठहरा। बाद में इसका नाम नीसान हो गया जो हमारे यहाँ मार्च-अप्रैल के दौरान पड़ता है।

फिर परमेश्वर ने मूसा को बताया कि नाश करने वाले दूत से इस्राएलियों के पहलौठे कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। महीने के दसवें दिन प्रत्येक परिवार, एक वर्ष का निर्दोष मेम्ना ले और चौदहवें दिन संध्या के समय उसे बलि करें। उसकी हड्डी तोड़ी नहीं जानी चाहिए। उसका खून लेकर अपने घर के दरवाजे के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएं। उसका माँस आग में भून कर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाया जाए।

फिर परमेश्वर ने कहा, ''उसमें से कुछ भी सवेरे तक न रहने देना, और यदि कुछ सवेरे तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिए मनुष्य कम हों, तो वह अपने पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे। अपनी कमर बाँधे, पाँव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना।''

इस्राएलियों ने मूसा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया। उन्होंने मेम्ने का लहू दरवाजों पर लगाया और यात्रा की तैयारी की। उस रात कोई भी अपने घर से बाहर नहीं निकला। मेम्ने के लहू ने उन्हें सुरक्षित रखा। आधी रात को मिस्रियों के सभी पहलौठे मारे गए और बड़ा हाहाकार मचा। मिस्रियों ने शीघ्रता से इस्राएलियों को अपने देश से निकाल दिया और इस प्रकार इस्राएलियों का छुटकारा हुआ।

मिस्र में इस्राएली लोग फिरौन के गुलाम थे। उसी प्रकार, हम लोग

तब तक शैतान के गुलाम हैं, जब तक कि हमारे लिए बहाए गए, प्रभु यीशु के लहू के द्वारा हमारा छुटकारा नहीं होता। उन घरों को मृत्यु का दूत पार कर गया जिन पर मेम्ने का खून लगा था, उसी प्रकार हम बचाए जाते हैं, जब प्रभु यीशु का लहू हमें ढाँपता है।

यह फसह कहलाया, क्योंकि नाश करने वाला दूत इस्राएलियों के घर को लांघ कर आगे बढ़ गया, जब उसने उनके दरवाजे के चौखटों पर मेम्ने का खून लगा हुआ देखा। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी, कि परमेश्वर ने अपने लोगों को जो छुटकारा दिया, उसके स्मरण में वे हर वर्ष इस फसह के पर्व को मनाएं।

याद करें :

1 कुरिन्थियों 5:7 क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है।

प्रश्न :

1. मिस्र में कौन-कौन सी विपत्तियाँ आई थीं?
2. अंतिम विपत्ति कौन सी थी?
3. अंतिम विपत्ति से इस्राएली कैसे बचाए गए?
4. ''फसह'' का क्या अर्थ है?
5. हम इस पाठ से क्या सीखते हैं?

पाठ 7

पीतल का सर्प

गिनती 21:4-9 यूहन्ना 3:14-16

परिचय :

बच्चों, क्या आपने साँप देखा है? क्या वह आपको अच्छा लगा? अक्सर लोग साँप को पसंद नहीं करते। जानते हो क्यों? साँप में ज़हर होता है, और उसके काटने से अनेकों की मृत्यु हुई है। जब इस्राएली जंगल में थे, तब एक बार वे परमेश्वर के विरुद्ध बड़बड़ाए, तब उन्हें सजा देने के लिए परमेश्वर ने विषैले साँप भेजे।

पाठ :

हमने सीखा कि इस्राएलियों ने कनान देश जाने के लिए मिस्र छोड़ा। कनान अधिक दूर नहीं था, और वे शीघ्र ही वहाँ पहुँच सकते थे, परन्तु उन्होंने इस बात पर विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर उन्हें शत्रुओं के देश से सुरक्षित ले चलेंगे। इस कारण परमेश्वर ने उन्हें सज़ा दी कि वे जंगल में चालीस वर्ष तक भटकते रहेंगे। परमेश्वर ने उनकी देखभाल की। परंतु अद्‌भुत रीति से सहायता प्राप्त होने के बावजूद वे शिकायत करते रहे।

एक कनानी राजा ने उनसे युद्ध किया, और जब इस्राएलियों ने प्रार्थना की तब परमेश्वर ने उन्हें विजय दिलाई। परन्तु फिर भी वे रोटी-पानी के लिए शिकायत करते रहे और मूसा और परमेश्वर के प्रति बड़बड़ाते रहे। परमेश्वर क्रोधित हुए और उन्होंने विषैले साँप भेजे, जिन्होंने बहुतों को काटा और वे मर गए। क्या आप अपने माता-पिता और शिक्षकों के विरुद्ध बड़बड़ाते हैं? क्या आप परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करते हैं? परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करना गंभीर पाप है। इस संसार में अनेक कठिनाइयाँ और समस्याएं हमारे सामने आती हैं, परन्तु हमें उसके कारण बड़बड़ाना नहीं चाहिए, बल्कि उनके गुज़र जाने तक धीरज रखना चाहिए।

साँप के काटने के बाद उन्होंने पश्चाताप किया। मूसा के पास आकर उन्होंने कहा, ''हमने पाप किया है, हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो।'' मूसा ने उनके लिए प्रार्थना की और परमेश्वर ने उत्तर दिया। परमेश्वर ने मूसा से कहा ''एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले, वह जीवित बचेगा।''

नये नियम में, प्रभु यीशु ने यहूदी गुरु नीकुदेमुस से कहा, कि जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर लटकाया था, कि लोग देखें और बचाए जाएं, उसी प्रकार वे स्वयं भी ऊँचे पर चढ़ाए जाएंगे, और जो अपने पापों की क्षमा और उद्धार के लिए उनकी तरफ देखेंगे, वे लोग बचाए जाएंगे। हम सबने पाप किया है, और हम सब अपने पापों के कारण अनन्त मृत्यु के लिए ठहराए गए हैं। परन्तु जो कोई कलवरी के क्रूस पर उठाए गए प्रभु यीशु की ओर विश्वास से देखेगा, वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। पीतल का सर्प असली दिखता था, परन्तु उसमें विष नहीं था। प्रभु यीशु मनुष्य थे परन्तु उनमें पाप नहीं था। उन्होंने हमारे पापों को अपने ऊपर उठा लिया, इसलिए वे हमें बचा सकते हैं।

इस्राएली लोग पीतल के सर्प को रखे रहे, और कुछ समय पश्चात् कुछ लोगों ने उसकी आराधना शुरू कर दी, जैसे उनके आसपास रहने वाले अन्यजाति लोग सोने, पीतल और पत्थर की मूर्तियों की करते थे। जब हिजकिय्याह राजा को पता चला कि उसके लोग क्या कर रहे हैं, तब उसने पीतल के सर्प को चूर-चूर करवाके फेंक दिया (2 राजा 18:4)।

याद करें :

यूहन्ना 3:14-15 जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों का पाप क्या था?

2. परमेश्वर ने उन्हें कैसे दण्ड दिया?
3. साँप के काटे हुओं को परमेश्वर ने कैसे चंगा किया?
4. पीतल का सर्प किस की तस्वीर है?
5. बचने के लिए हम किसे देख सकते हैं?

पाठ 8

दस आज्ञाएँ

निर्गमन 20:4-17 रोमियों 13:8-10

परिचय :

बच्चों, क्या आप प्रतिदिन बाइबल पढ़ते हैं? क्या आप प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं? यदि आप प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हो, तो आप हर रोज़ वचन पढ़ने के द्वारा प्रभु की आवाज़ सुनेंगे, और प्रार्थना में प्रभु से बातें करेंगे। एक बार प्रभु यीशु पर विश्वास करने के बाद आप बदल जाते हैं, और फिर ऐसी कई बातें हैं जो आपको करनी चाहिए और नहीं करनी चाहिए, और वो सब कुछ हमारे लिए बाइबल में लिखा है, जो परमेश्वर का वचन है। अपने जीवन को कैसे जीना है, यह जानने के लिए हमें परमेश्वर की पुस्तक को अक्सर पढ़ना चाहिए।

पाठ :

मिस्र देश छोड़ने के तीन महीने के बाद इस्राएली लोग सीनै पर्वत के पास पहुँचे। उन्होंने वहाँ छावनी डाली, और परमेश्वर बादलों में होकर उस पर्वत के ऊपर उतरे।

मूसा पर्वत के ऊपर परमेश्वर की उपस्थिति में गया, और उसे पत्थर की दो पटियाएं दी गईं, जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाएं लिखी थीं।

आइए, हम उन आज्ञाओं को, और नए नियम में दिए गए उनके संदर्भों को देखें।

1. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। मत्ती 4:10

2. तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न उनको दण्डवत् करना और न उनकी उपासना करना।

1 कुरिन्थियों 10:14; 1 यूहन्ना 5:21

3. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना। मत्ती 5:34-35

4. तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। कुलुस्सियों 2:16

5. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, कि तू बहुत दिन तक जीवित रहे। इफिसियों 6:1-2

6. तू हत्या न करना। 1 यूहन्ना 3:15

7. तू व्यभिचार न करना। मत्ती 5:27-28

8. तू चोरी न करना। इफिसियों 4:28

9. तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना। कुलुस्सियों 3:9

10. तू अपने पड़ोसी की किसी भी वस्तु का लालच न करना। कुलुस्सियों 3:5

हम इन आज्ञाओं का पालन पूर्ण रूप से नहीं कर सकते। परन्तु नए नियम में दी गई दो आज्ञाओं में ये दसों आज्ञाएं समाहित हैं।

1. तू प्रभु अपने परममेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।

2. अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

चौथी आज्ञा केवल इस्राएलियों के लिए थी। यह कलीसिया पर लागू नहीं होती।

जब प्रभु यीशु मसीह आए तब उन्होंने पूर्ण सिद्धता के साथ व्यवस्था को पूरा किया। फिर उन्होंने हमें सिखाया कि, परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम हमें आज्ञाकारी रहने में सहायता करेगा। पवित्र आत्मा की सहायता से हम आज्ञापालन कर सकेंगे, यदि हम सच्चाई से परमेश्वर से प्रेम करें और अपने पड़ोसी से भी वैसे ही प्रेम करें जैसा प्रभु यीशु ने हमसे किया।

''प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।'' रोमियों 13:10

याद करें :

यूहन्ना 13:34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो, जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने कहाँ पर मूसा को आज्ञाएं दीं?
2. वे किस पर लिखी हुई थीं?
3. वह किसने लिखा?
4. दस आज्ञाएं कौन-कौन सी हैं?
5. व्यवस्था का पालन करने के विषय में नया नियम क्या कहता है? (रोमियों 13:10)

पाठ 9

सोने का बछड़ा

निर्गमन 32:1-28

परिचय :

बच्चों, क्या तुम्हें याद है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को कितनी आज्ञाएं दी थी? क्या आप बता सकते हैं कि वे कौन-कौन सी थीं? पहली आज्ञा क्या थी? यह कि : तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। अजीब बात यह थी कि जब परमेश्वर मूसा को यह आज्ञा दे रहे थे, तब इस्राएली अपनी छावनी में इसी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे थे।

दूसरी आज्ञा क्या थी? कि, तू कोई मूर्ति खोदकर न बनाना! दुख की बात है कि इस्राएली इस आज्ञा को भी तोड़ रहे थे। जब आपके शिक्षक ध्यान देने के लिए कहते हैं तब क्या आप पूरी आज्ञा मानते हैं? आज हम सीखेंगे कि कैसे इस्राएलियों ने इन आज्ञाओं को तोड़ा।

पाठ :

वायदे के देश की ओर जाते हुए, रास्ते में इस्राएलियों ने सीनै पर्वत के आगे छावनी डाली। वहीं परमेश्वर ने मूसा को पर्वत के ऊपर बुलाया। वहाँ मूसा ने परमेश्वर के साथ चालीस दिन और चालीस रातें बिताईं। मूसा के वापस न आने से सब लोग परेशान होकर उसके भाई हारून के पास गए, और उससे कहा, कि उनकी अगुआई करने के लिए एक देवता बनाए। निश्चित रूप से वे लोग मूर्ख थे!

हारून ने बड़ा विचित्र कार्य किया। मिस्र से ही वह परमेश्वर के कार्यों को देखता आ रहा था। उसे लोगों को समझाना चाहिए था कि यहोवा के अलावा और कोई परमेश्वर है ही नहीं। परन्तु उसने स्त्रियों से उनके सोने के आभूषण लिए और उसे पिघलाकर एक बछड़ा बनाया, जैसा उन्होंने मिस्र में देखा था। लोग उसके चारों ओर एकत्र होकर नाचने-गाने लगे, और यह घोषणा की, कि यही वह ईश्वर है जो उन्हें

मिस्र देश से छुड़ा लाया है। उन्होंने उसके लिए एक वेदी बनाई और अगले दिन पर्व की घोषणा कर दी।

इस दौरान मूसा पर्वत पर था, और परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''नीचे उतर जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोगों ने भयंकर पाप किया है। परमेश्वर ने उन का नाश करके उनके बदले मूसा के द्वारा एक महान राष्ट्र बनाना चाहा। परन्तु मूसा ने लोगों के लिए विनती की, और इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया गया वायदा परमेश्वर को स्मरण दिलाया। परमेश्वर ने मूसा की बात मानकर उन्हें नाश नहीं किया परन्तु उनको दण्ड़ दिया। जब हम पाप करते हैं तब परमेश्वर उसको अनदेखा नहीं कर सकते। पाप को दण्ड मिलना चाहिए। क्या आपके माता-पिता आपको सजा नहीं देते जब आप उनकी आज्ञा नहीं मानते?

पर्वत से नीचे आकर मूसा ने देखा कि लोगों ने क्या किया है, और वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने पत्थर की पटियाओं को तोड़ डाला। फिर उसने बछड़े को लेकर आग में डालकर फूँक दिया और पीसकर चूर-चूर कर डाला और पानी में डालकर उन्हें पिलवा दिया। फिर मूसा ने लोगों से कहा, ''जो कोई यहोवा की ओर का है, वह मेरे पास आए।'' तब लेवी गोत्र के लोग उसके पास आए। मूसा ने उन्हें तलवार देकर उन मूर्तिपूजकों को मार डालने के लिए भेजा। उस दिन तीन हज़ार लोग मारे गए।

याद करें :

1 यूहन्ना 5:21 हे बालकों, अपने आप को मूरतों से बचाए रखो।

प्रश्न :

1. मूसा पहाड़ के ऊपर परमेश्वर के साथ कितने दिन रहा?
2. इस्राएलियों का भयंकर पाप क्या था?
3. उन्होंने कौन सी आज्ञा का उल्लंघन किया?
4. परमेश्वर ने उन्हें उनके पापों का दण्ड कैसे दिया?
5. परमेश्वर ने पूरी जाति को नष्ट क्यों नहीं किया?

पाठ 10

छड़ी-जिसमें फूल खिले

गिनती 17

परिचय :

इस्राएली लोग हर समय आज्ञाकारी नहीं रहते थे, कभी-कभी वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं करते थे और पाप करते थे। लोग बड़बड़ाते या मूर्तिपूजा करते थे। कभी-कभी उनके अगुए ही उनको भटका देते थे। परमेश्वर चाहते हैं कि उनकी संतान हमेशा आज्ञाकारी रहें। परमेश्वर इस बात से घृणा करते हैं जब परमेश्वर के लोग बड़बड़ाते या विद्रोह करते हैं। विद्रोह करने वालों को परमेश्वर दण्ड देते हैं। एक लेवी, कोरह ने अपने साथी दातान और अबीराम के साथ मिलकर मूसा और हारून के विरुद्ध विद्रोह किया। परमेश्वर ने उन पर भयंकर न्याय भेजा, और पृथ्वी फट गई और उनको निगल लिया। परमेश्वर ने हारून और उसके परिवार को याजक पद के लिए चुना था। आज हम सीखेंगे कि परमेश्वर ने किस प्रकार इस्राएलियों को दिखाया कि उन्होंने हारून को विशेष रूप से चुना है।

पाठ :

क्या आप जानते हैं कि इस्राएलियों के कितने गोत्र थे? बारह! उसमें जन्मसिद्ध अधिकार यूसुफ को मिला, राजपद यहूदा को और याजकपद लेवी को मिला। परमेश्वर ने हारून और लेवी गोत्र के उसके परिवार को याजक होने के लिए नियुक्त किया।

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि प्रत्येक गोत्र से एक-एक छड़ी लो। प्रत्येक गोत्र के अगुए का नाम उसकी छड़ी पर लिखा हो। लेवी गोत्र की छड़ी पर हारून का नाम लिखो। उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया। अगली सुबह मूसा छड़ियों की जाँच करने गया, तो देखा कि हारून की छड़ी में कलियाँ लगीं और

फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं। मूसा छड़ियों को बाहर ले आया और हरेक अगुए ने अपनी-अपनी छड़ी ले ली। इस प्रकार परमेश्वर ने विद्रोह करने वाले लोगों के सामने यह प्रमाणित कर दिया कि उन्होंने हारून को ही महायाजक पद के लिए चुना है। और परमेश्वर ने मूसा से कहा, ''हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के सामने फिर से रख दो, जो परमेश्वर के चुनाव की एक निशानी बनकर रखी रहे।''

छड़ी, जिसमें फूल खिले, वह नए नियम के एक सत्य की तस्वीर है। वह छड़ी एक सूखी, मृत टहनी थी, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से उसमें जान आ गई और फल भी लगे। हमारे प्रभु यीशु की मृत्यु हुई, परन्तु वे नए जीवन के साथ जी उठे, और अपने पुनरुत्थान के द्वारा उन्होंने प्रमाणित कर दिया कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं। वे हमारे महान महायाजक हैं, जो जीवित हैं और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठकर हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं। यह इस बात का भी प्रमाण है, कि प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता मानकर विश्वास करने वाले लोग अपनी सांसारिक मृत्यु के बाद जी उठेंगे और स्वर्ग में प्रभु यीशु के साथ सदा काल के लिए रहेंगे।

याद करें :

प्रकाशितवाक्य 1:18 मैं मर गया था, और अब देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ।

प्रश्न :

1. कोरह, दातान और अबीराम का पाप क्या था?
2. परमेश्वर ने उन्हें कैसे दण्ड दिया?
3. परमेश्वर अपने लोगों से क्या अपेक्षा रखते हैं?
4. हारून याजक पद के लिए चुना हुआ है, यह अपने लोगों के सामने प्रमाणित करने के लिए परमेश्वर ने कौन सा चिह्न दिया?
5. इस चिह्न से हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?

पाठ 11

मूसा की मृत्यु

व्यवस्थाविवरण 34

परिचय :

बच्चों, आइए हम पढ़ें भजन संहिता 90:1-10।

1 हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है।
2 इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, या तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है।
3 तू मनुष्य को लौटाकर चूर करता है, और कहता है, कि हे आदमियो, लौट आओ!
4 क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं जैसा कल का दिन जो बीत गया, या रात का एक पहर।
5 तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है; वे स्वप्न से ठहरते हैं, वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं।
6 वह भोर को फूलती और बढ़ती है,
और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है।
7 क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं।
8 तूने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख
और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है।
9 क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं,
हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते हैं।
10 हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं,
और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं,
तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है।

यह भजन 90 मूसा ने लिखा था। इसमें क्या संदेश है? क्या हम

सब को इस दुनिया से जाना न होगा? आज हम सीखेंगे कि इस भजन को लिखने वाले मूसा की मृत्यु कैसे हुई।

पाठ :

मूसा और इस्राएलियों ने मोआब के मैदान में छावनी डाली, तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह नबो, पहाड़ पर जो पिसगा की एक चोटी है चढ़ जाए। वहाँ से परमेश्वर ने मूसा को वह देश दिखाया जिसका वायदा उन्होंने इस्राएल से किया था। मूसा को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि सीनै के जंगल में, कादेश के मरीबा में मूसा ने आज्ञा नहीं मानी थी। (गिनती 20:1-13)

मूसा ने चालीस वर्षों तक जंगल में इस्राएलियों का मार्ग-दर्शन किया। इन घटनापूर्ण वर्षों में बहुत धीरज के साथ, कष्टों और परेशानियों के बीच मूसा ने उन की अगुआई की। अब परमेश्वर को भाया कि अपने दास को अपने पास बुला ले। पहाड़ की चोटी पर मूसा की मृत्यु हो गई। और परमेश्वर ने उसे मोआब के देश में बेतपोर के सामने एक तराई में मिट्टी दी, और आज के दिन तक कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहाँ है। (व्यवस्थाविवरण 34:5)। यहूदा 9 में हम पढ़ते हैं कि मूसा के शव के बारे में शैतान और प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल के बीच में वाद विवाद हुआ। कोई नहीं जानता कि उसे कहाँ दफनाया था। मूसा अपनी मृत्यु के समय 120 वर्ष का था। इस्राएलियों ने उसके लिए तीस दिन तक विलाप किया। कितना अद्भुत अगुआ था वह! व्यवस्थाविवरण इस गवाही के साथ समाप्त होता है, कि समस्त इस्राएल में मूसा की तरह कोई और भविष्यद्वक्ता नहीं हुआ। यद्यपि मूसा की मृत्यु हो गई, परन्तु हम नए नियम में पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु के रूपान्तरण के समय मूसा वहाँ प्रभु से और एलिय्याह से बातचीत करता है (मरकुस 9:4)। ''जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा'' (यूहन्ना 11:25)।

याद करें :

भजन संहिता 116:15 यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है।

प्रश्न :

1. वायदे के देश में प्रवेश करने की अनुमति मूसा को क्यों नहीं थी?
2. मूसा ने उस देश को कहाँ से देखा?
3. मूसा को कहाँ दफनाया गया?
4. अपनी मृत्यु के समय मूसा की उम्र क्या थी?
5. परमेश्वर की संतानों को, मृत्यु के पश्चात् की आशा क्या है?

पाठ 12

गिदोन

न्यायियों अध्याय 6-8

परिचय :

इस्राएली वायदे के देश में पहुँच तो गए थे, फिर भी उनके अनेक शत्रु थे, जो अक्सर उन पर आक्रमण करते थे और उन पर शासन करते थे। परन्तु जब वे पूरे मन से परमेश्वर पर विश्वास करते थे तब परमेश्वर उनको अद्‌भुत रीति से छुड़ाते थे। कभी-कभी वे परमेश्वर से दूर होकर मूर्तिपूजा में पड़ जाते थे, तब परमेश्वर उनके शत्रुओं को उन पर विजयी होने देते थे। एक बार मिद्यानियों ने उन्हें अपने वश में कर लिया, और उनको पहाड़ों और गुफाओं में छुपना पड़ा। वे परमेश्वर की तरफ मुड़े और रो-रोकर छुटकारे के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी और उन्हें छुटकारा दिलाने गिदोन को भेजा। आज हम सीखेंगे कि गिदोन ने क्या किया।

पाठ :

गिदोन दाखरस के कुण्ड में गेहूँ इसलिए झाड़ रहा था कि मिद्यानियों से छिपा रखे, तब परमेश्वर के दूत ने उसको दर्शन देकर कहा, ''हे शूरवीर सूरमा, यहोवा तेरे संग है। जा, और तू इस्राएलियों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाएगा।''

गिदोन को संदेह था इस कारण उसने आपत्ति जताई, परन्तु परमेश्वर ने कहा, ''निश्चय मैं तेरे संग रहूँगा।'' फिर परमेश्वर ने उससे कहा ''अपने पिता के बैल को ले, जो सात वर्ष का है, और बाल की वेदी को गिरा दे, और उसके पास की अशेरा देवी को काट डाल। फिर यहोवा की एक वेदी बना, और उस बैल को, अशेरा की लकड़ी जलाकर होमबलि चढ़ा।''

गिदोन ने अपने संग दस दासों को लेकर यहोवा के वचन के

अनुसार किया, परन्तु उसे न केवल उस शहर के लोगों का डर था, बल्कि अपने परिवार का डर भी था, इस कारण उसने यह कार्य रात में किया। बाल के लिए वेदी बनाकर इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। क्या आप जानते हैं कि वह कौन सी आज्ञा थी जो उन्होंने तोड़ी?

फिर गिदोन और उसके लोगों से युद्ध करने मिद्यानी और अमालेकी बड़ी सेना लेकर आए, परन्तु परमेश्वर का आत्मा गिदोन में समाया। परमेश्वर के लोगों को सदैव पवित्र आत्मा की सामर्थ में सब कार्य करना चाहिए। (इफिसियों 5:18)। गिदोन ने नरसिंगा फूँका और बड़ी संख्या में इस्राएली उसके पास इकट्ठे हो गए। परमेश्वर ने गिदोन से कहा कि इतने लोग बहुत अधिक हैं। पूर्ण रूप से परमेश्वर पर विश्वास करने वाले, थोड़े या कमज़ोर लोगों के द्वारा परमेश्वर आश्चर्यकर्म करते हैं। अतः गिदोन ने लोगों से कहा, ''जो कोई डर के मारे थरथराता हो, वह लौट जाए और दस हजार रह गए। परमेश्वर ने कहा, कि अब भी लोग अधिक हैं। तब गिदोन उन्हें सोते के पास ले गया। परमेश्वर ने गिदोन से कहा, ''जितने कुत्ते के समान जीभ से पानी चपड़-चपड़ करके पीएँ उनको अलग रखो और जितने घुटने टेककर पीएं उन्हें अलग रखो।'' उनमें 300 ऐसे थे जिन्होंने चपड़-चपड़ करके पानी पीया, जिससे यह प्रकट हुआ कि वे किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार हैं। परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया और बाकी लोगों को घर भेज दिया। एक बड़ी सेना के साथ युद्ध करने के लिए अब गिदोन के साथ 300 लोग रह गए।

मिद्यानी और अमालेकी लोग यिज्रेल की तराई में एकत्र हुई थे। गिदोन ने एक रण-विधि अपनाई। उसने अपने लोगों को सौ-सौ के तीन समूहों में बाँटा। हर एक को उसने एक नरसिंगा और खाली घड़ा दिया, और घड़े के भीतर एक मशाल थी। उन्होंने रात ही रात को शत्रु की छावनी को तीन तरफ से घेर लिया। गिदोन ने उनसे कहा कि जब वह और उसके साथी नरसिंगा फूँकें तब सब लोग भी ऐसा ही करें और अपने घड़ों को तोड़ डालें ताकि प्रकाश दिखाई दे। तब सब लोगों ने गिदोन की आज्ञानुसार किया।

शत्रु चौंक गए और भयभीत हो गए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाएँ। गिदोन और उसके साथी नरसिंगा फूँकते रहे, और शत्रु असमंजस में एक दूसरे से ही युद्ध करने लगे और फिर भाग गए। तब गिदोन ने एप्रैमियों को अपनी सहायता के लिए बुलाया कि शत्रुओं को देश के बाहर निकाल दें।

याद करें :

भजन संहिता 91:1 जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।

प्रश्न :

1. गिदोन क्या कर रहा था जब परमेश्वर ने उसे बुलाया?
2. गिदोन ने क्यों रात को बलि चढ़ाई?
3. क्यों गिदोन ने बहुत सारे लोगों को वापस घर भेज दिया?
4. शत्रु क्यों भाग गए?
5. गिदोन के जीवन से हम क्या सीखते हैं?

पाठ 13

शिमशोन

न्यायियों, अध्याय 13-16

परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा, कि कैसे परमेश्वर ने एक साधारण से व्यक्ति और एक छोटी सी सेना के द्वारा अपने लोगों को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया। आज हम सीखेंगे कि कैसे एक बलवान पुरुष के द्वारा परमेश्वर ने अपने लोगों को पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाया।

पाठ :

मानोह दान गोत्र का था और वह और उसकी पत्नी संतानहीन थे। एक दिन परमेश्वर के दूत ने मानोह की पत्नी को दर्शन देकर कहा कि तुमको एक पुत्र उत्पन्न होगा, जो जन्म से ही नाज़ीर होगा। वह इस्राएलियों को पलिश्तियों से छुड़ाएगा, इसलिए तुम दाखमधु या मदिरा मत पीना और न कुछ अशुद्ध वस्तु खाना, क्योंकि वह एक विशेष व्यक्ति होगा। उसके सिर पर कभी छुरा न फिरे। लम्बे बाल नाज़ीर होने का चिन्ह था।

मानोह की पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम शिमशोन रखा। बालक बड़ा हुआ और परमेश्वर ने उसे आशीष दी, और अक्सर परमेश्वर का आत्मा उसमें समाता था। एक दिन उसके सामने एक शेर आ गया। उसके पास कोई हथियार नहीं था, परन्तु परमेश्वर का आत्मा उसमें समाया और उसने शेर को आसानी से मार डाला। फिर एक बार जब उसका झगड़ा पलिश्तियों से हो गया, तब उसने 300 लोमड़ियाँ पकड़ीं, और मशाल लेकर दो-दो लोमड़ियों की पूँछ एक साथ बाँधी और उनके बीच एक-एक मशाल बाँधी, और मशालों में आग लगाकर लोमड़ियों को पलिश्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और सारे खेत जल गए। फिर एक बार उसने गदहे के जबड़े की हड्डी से एक हजार पुरुषों को मार डाला। एक बार जब शिमशोन गाज़ा नामक जगह गया, तब उसके शत्रुओं ने सोचा कि हमने उसे पकड़ लिया है, परन्तु वह

रात को उठा और नगर के फाटक के दोनों पल्लों और बाजुओं को पकड़कर उखाड़ लिया और अपने कन्धों पर रखकर उन्हें एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। पलिश्तियों ने शिमशोन को मार डालने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु उसकी ऐसी सामर्थ थी कि वे उसे मार न सके।

शिमशोन ने बीस वर्ष इस्राएल का न्याय किया।

अंत में दलीला नाम की एक स्त्री की सहायता से पलिश्तियों ने शिमशोन को बंदी बना लिया। दलीला बड़े प्यार से उसकी ताकत के रहस्य के बारे में पूछती रही, और वह हमेशा उसको मूर्ख बनाता रहा। परन्तु अंत में उसने तंग आकर सच बता दिया। उसने दलीला को बताया कि वह एक नाज़ीर है, और परमेश्वर के लिए समर्पित होने के कारण उसके बाल कभी भी काटे नहीं गए। दलीला ने उसे सुला दिया और उसके बाल काट दिए, और पलिश्तियों को बुलाकर उसे पकड़वा दिया। शिमशोन को समझ आया कि वह इतना कमजोर हो गया था, कि शत्रुओं से लड़ नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उसे छोड़कर चला गया था। उन्होंने शिमशोन की आँखें फोड़ दीं और उससे बंदीगृह में चक्की पिसवाई।

कुछ समय में शिमशोन के बाल फिर से बढ़ने लगे और उसकी शक्ति भी वापस आने लगी। परन्तु किसी को भी इस बात का पता नहीं चला। फिर एक दिन पलिश्ती अपने देवता दागोन के लिए बलिदान चढ़ाने और आनंद मनाने के लिए इकट्ठे हुए, और शिमशोन को लाया गया कि उनके लिए तमाशा करे। सारे पलिश्ती अपने परिवारों के साथ वहाँ थे। शिमशोन को उन दो खम्भों के बीच खड़ा किया गया जिन पर पूरा घर टिका हुआ था। वहाँ खड़े होकर शिमशोन ने परमेश्वर से प्रार्थना की, कि एक आखिरी बार उसे सामर्थ दें। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे उसकी सामर्थ वापस दी। शिमशोन ने दोनों खम्भों को पकड़ा और अपना सारा बल लगाकर झुका। तब वह घर उस पर और वहाँ एकत्र हज़ारों पलिश्तियों पर गिर पड़ा। उस दिन शिमशोन के साथ तीन हजार लोग मारे गए।

शिमशोन के परिवार वाले आए और उसे उठाकर ले गए और उसे उसके पिता मानोह की कब्र में मिट्टी दी।

शिमशोन के जीवन से हम सीखते हैं कि परमेश्वर के द्वारा चुने हुए होने के बावजूद, यदि हम सावधान नहीं रहेंगे तो हम भटक सकते हैं। शिमशोन ने अपनी ताकत और अपनी आँखें खोईं, जब वह परमेश्वर की व्यवस्था को भूल गया। शिमशोन के जीवन को याद रखें। हमारे जीवन मे यह चेतावनी की तरह हो कि हम भटक न जाएँ।

याद करें :

भजन संहिता 84:5 क्या ही धन्य है वह पुरुष जो तुझ से शक्ति पाता है।

प्रश्न :

1. मानोह की पत्नी से किसने कहा कि उसको बालक उत्पन्न होगा?
2. शिमशोन की ताकत का रहस्य क्या था?
3. शिमशोन ने गदहे के जबड़े की हड्डी से कितने लोगों को मार डाला?
4. शिमशोन ने पलिश्तियों के खेतों को कैसे नष्ट किया?
5. शिमशोन गाज़ा में कैसे बचा था?
6. शिमशोन ने अपनी ताकत कैसे खोई?
7. अपने बड़े नुकसान का बदला शिमशोन ने कैसे लिया?
8. शिमशोन के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ 14

शाऊल और दाऊद

1 शमूएल अध्याय 24,26

परिचय :

शिमशोन की मृत्यु के पश्चात् शमूएल ने इस्राएलियों का न्याय किया। अपने पड़ोसी देशों की तरह एक राजा के लिए इस्राएलियों ने शमूएल से माँग की। क्या आप जानते हैं कि उनका पहला राजा कौन था? एक बिन्यामीनी था! परमेश्वर ने शमूएल से कहा कि इस्राएल का राजा होने के लिए वह शाऊल का अभिषेक करे, और लोग बहुत खुश हुए।

पाठ :

शाऊल के जीवन काल में अक्सर इस्राएलियों का पलिश्तियों के साथ युद्ध होता था। गोलियत नाम के एक पलिश्ती दानव ने इस्राएलियों को चुनौती दी, कि एक पुरुष को चुनकर उससे लड़ने के लिए भेज दें। शाऊल और उसकी सेना उस दानव से भयभीत थे, परन्तु दाऊद नाम के एक छोटे से चरवाहे ने कहा कि वह उस दानव से युद्ध करेगा, क्योंकि उसे निश्चय था कि उसे कुछ हानि न होगी क्योंकि परमेश्वर उसके साथ हैं। एक साधारण से गोफन में पत्थर रखकर दाऊद ने गोलियत को मार डाला।

शाऊल और उसके लोग बहुत खुश थे कि दानव मार डाला गया, परन्तु जब शाऊल ने लोगों को दाऊद का गुणगान करते देखा तो वह ईर्ष्या से भर गया, और इसलिए वह दाऊद की जान लेना चाहता था! शाऊल हमेशा परमेश्वर का आज्ञाकारी नहीं रहता था, अत: परमेश्वर ने शमूएल के द्वारा कहलवाया, कि वह शाऊल से राज्य लेकर दाऊद को दे देंगे। यद्यपि शाऊल को पता था कि अगला राजा दाऊद ही बनेगा, फिर भी उसने दाऊद को जान से मारने का प्रयत्न किया। अत: दाऊद अपने साथियों को लेकर पहाड़ों पर भाग गया और वहीं रहने लगा।

एक बार दाऊद एनगदी की एक गुफा में छुपा हुआ था। शाऊल तीन हज़ार पुरुषों को लेकर दाऊद की खोज में निकला। रास्ते में वह दिशा फिरने एक गुफा में गया, और नहीं जानता था कि उसी गुफा की छोर में दाऊद अपने लोगों के साथ छुपा हुआ था।

दाऊद के लोगों ने उससे कहा, ''शाऊल को जान से मारने का कितना बढ़िया अवसर हाथ आया है! चलो उसे मार दें, और किसी को पता भी नहीं चलेगा।''

परन्तु दाऊद ने कहा, ''नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। शाऊल परमेश्वर का अभिषिक्त है, और मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ नहीं उठा सकता।'' परन्तु दाऊद ने शाऊल के पास जाकर उस के बागे की छोर को छिपकर काट लिया। कुछ देर बाद शाऊल खड़ा हो गया और गुफा से निकलकर चला गया। वह कुछ ही दूर गया था कि दाऊद ने गुफा से बाहर आकर शाऊल को पीछे से पुकारकर कहा, ''क्यों तू मुझे शत्रु की तरह देखता है? देख तेरे बागे का टुकड़ा मेरे हाथ में है। मैं चाहे तो तुम्हे मार सकता था, परन्तु मैंने ऐसे नहीं किया क्योंकि तू परमेश्वर का अभिषिक्त है।''

जब शाऊल ने वह देखा, तो रोने लगा और बोला ''तू मुझ से अधिक धर्मी है।'' फिर वह वापस घर चला गया, परन्तु शीघ्र ही उसके अंदर ईर्ष्या पैदा हुई और वह 3000 लोगों को लेकर फिर से दाऊद को ढूँढ़ने निकल गया।

दाऊद ने जासूस भेजे जिन्होंने शाऊल का पता लगाया। फिर दाऊद और उसका साथी अबीशै उनकी छावनी में चुपचाप घुस गए जब शाऊल और उसके योद्धा सो रहे थे। अबीशै अपने भाले से शाऊल को मार डालना चाहता था, परन्तु दाऊद ने उसे रोक दिया, और उसके सिरहाने से सुराही और भाला उठा लिया और चले गए। फिर दूसरी तरफ जाकर दूर एक पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर उसने पुकारकर अब्नेर से कहा, ''तू कैसा सेनापति है? तू ने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं की? एक व्यक्ति तेरे स्वामी राजा को मारने आया था परन्तु तुम सो रहे थे।''

शाऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचानी और वह समझ गया कि दाऊद ने एक बार फिर उसको छोड़ दिया है। तब शाऊल ने कहा, ''मैंने पाप किया है। अब मैं कभी तुम्हारे पीछे नहीं आऊँगा, मैंने मूर्खता की है।''

दाऊद प्रभु यीशु मसीह के समान है। प्रभु ने अपने शत्रुओं से प्रेम किया और उनके लिए अपना प्राण दिया। (रोमियों 5:8-10)।

याद करें :

भजन संहिता 34: 19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।

प्रश्न :

1. दाऊद ने गोलियत को कैसे मारा?
2. दाऊद से शाऊल क्यों ईर्ष्या करता था?
3. गुफा में अवसर मिलने पर भी दाऊद ने शाऊल की जान क्यों नहीं ली?
4. दाऊद ने शाऊल के प्रति अपनी वफादारी को कैसे प्रमाणित किया?
5. शाऊल को उसके तंबू में जीवित छोड़ देने का, दाऊद के पास क्या प्रमाण था?
6. शाऊल और दाऊद में वास्तविक अन्तर क्या है?

पाठ 15

योनातन

1 शमूएल अध्याय 18-20

परिचय :

हमने सीखा, कि कैसे शाऊल दाऊद से ईर्ष्या रखता था और उसको मार डालना चाहा था, परन्तु दाऊद ने शाऊल को छोड़ दिया था। फिर भी शाऊल का पुत्र योनातन दाऊद से बहुत प्रेम करता था, और जीवन भर उसका मित्र बना रहा। आपके भी अपने प्यारे मित्र अवश्य होंगे जिनके साथ आप अपना बहुत समय व्यतीत करना पसंद करते हैं। दाऊद और योनातन भी ऐसे ही थे। वे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

पाठ :

इस्राएल के राजा शाऊल का सबसे बड़ा पुत्र था योनातन। दाऊद एक चरवाहा था, जो यिशै नाम के किसान के आठ पुत्रों में सबसे छोटा था।

पिछले पाठ में हमने सीखा, कि दाऊद ने कैसे एक दानव को मार दिया था। दाऊद अति सुंदर था। योनातन ने दाऊद को पसंद किया और जो उसने किया उसके लिए उसकी प्रशंसा की और उससे दोस्ती की, और परमेश्वर के नाम में उससे वाचा बाँधी। अपनी दोस्ती की निशानी के तौर पर उसने दाऊद को अपना बागा, अपने वस्त्र, अपनी तलवार और धनुष और अपना कटिबंध भी दे दिया।

फिर भी शाऊल दाऊद से ईर्ष्या करता था, और उसने उसे मार डालने की योजना बनाई। उसने अपने पुत्र योनातन से और अपने सेवकों से कहा कि दाऊद को मार डालें, परन्तु योनातन ने अपने पिता से विनती की, और दाऊद को न मरवाने का वायदा भी करवाया। शाऊल योनातन से क्रोधित था, इसलिए उसने चिल्लाकर कहा, ''जब तक यिशै का पुत्र जीवित रहेगा तब तक तुम राजा नहीं बन सकते।''

योनातन को उस बात की परवाह नहीं थी, उसने बाहर जाकर दाऊद को चेतावनी दी कि वह शाऊल से सावधान रहे। योनातन जानता था कि शाऊल के बाद दाऊद ही राजा बनेगा, परन्तु इस बात का उसे कोई दुख नहीं था। उसने अपने मित्र से कहा, कि जब तक वह राज्य करेगा, तब तक वह उससे और उसके परिवार से दयालु बना रहे। (20:13-15)।

उन दोनों के बीच एक विशेष दोस्ती थी। वह एक दूसरे से निस्वार्थ प्रेम करते थे।

उन्होंने एक दूसरे के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर के नाम से एक दूसरे से वायदे किए। शाऊल के कारण दाऊद जंगलों में चला गया, फिर भी योनातन उसका मित्र बना रहा और परमेश्वर पर विश्वास बनाए रखने में उसकी सहायता की। (22:16-18)। क्या आप अपने मित्र के लिए ऐसा करते हैं? क्या आप उनकी सहायता करते हैं कि वो परमेश्वर पर अपना विश्वास बनाए रखे चाहे कोई परेशानी आए? दोस्तों को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए, कि परमेश्वर पर अपने विश्वास को मजूबत कर सकें।

पलिश्तियों से युद्ध करते हुए शाऊल और योनातन की मृत्यु हो गई और दाऊद राजा बन गया। दाऊद एक कवि भी था, और जब योनातन की मृत्यु हो गई, तब दाऊद ने उसके लिए एक अति सुंदर विलापगीत लिखा। वह आप 2 शमूएल 1:19-26 में पढ़ सकते हैं।

हमारा सबसे अच्छा मित्र प्रभु यीशु हैं। उन्होंने हमारे लिए अपना प्राण दिया। इस कारण हमें भी उससे प्रेम करना चाहिए और अपना संपूर्ण जीवन उनको देना चाहिए। हमें भी योनातन की तरह प्रेम करना चाहिए।

याद करें :

नीतिवचन 17:17 मित्र सब समयों में प्रेम रखता है, और विपत्ति के दिन भाई बन जाता है।

प्रश्न :

1. योनातन दाऊद से कब मिला?

2. योनातन ने दाऊद को क्या दिया?
3. योनातन ने दाऊद के साथ क्या वाचा बाँधी?
4. योनातन ने दाऊद के प्रति अपना प्रेम कैसे दिखाया?
5. योनातन और दाऊद के जीवन से हम क्या सीखते हैं?

पाठ 16

मपीबोशेत

2 शमूएल 9

परिचय :

क्या आपको उन दो मित्रों के नाम याद हैं, जिनके बार में हमने पिछले पाठ में सीखा था? हमने सीखा था, कि उन्होंने परमेश्वर के नाम में वाचा बाँधी थी। योनातन ने दाऊद से कौन सा वायदा करने को कहा था? (देखें। शमूएल 20:14-15)। योनातन चाहता था कि दाऊद उससे वायदा करे, कि राजा बनने पर वह योनातन के परिवार के प्रति दयालु बना रहेगा, चाहे योनातन की मृत्यु हो जाए। आइए हम सीखें कि कैसे दाऊद ने अपना वायदा पूरा किया।

पाठ :

दाऊद इस्राएल का राजा बन गया। उसने योनातन के साथ बाँधी हुई वाचा को स्मरण रखा। उसने योनातन के सेवक सीबा से पूछा कि क्या योनातन के परिवार का कोई व्यक्ति जीवित है। सीबा ने राजा से कहा, ''योनातन का पुत्र मपीबोशेत है, वह लोदेबार मे रहता है, और दोनों पाँवों से पंगुला है।''

मपीबोशेत केवल पाँच वर्ष का था जब उसका पिता योनातन और दादा शाऊल युद्ध में मारे गए थे। उसकी धाई यह सोचकर डर गई थी, कि उसकी जान को खतरा है। उसने मपीबोशेत को उठाया और सुरक्षित स्थान की ओर भागी, परन्तु बालक उसके हाथ से गिर गया और उसके दोनों पैर टूट गए थे। यह सुनकर दाऊद ने तुरंत मपीबेशेत को बुलवाया।

मपीबोशेत दाऊद राजा के दरबार में जाने से डरा, परन्तु जब वहाँ पहुँचा तब दाऊद ने उसका स्वागत किया और उसके पिता योनातन की सारी संपत्ति उसको दे दी। फिर उसने सीबा से कहा, कि वह और उसके पुत्र मपीबोशेत की धन-संपत्ति की देखभाल करेंगे, और मपीबोशेत

और उसका परिवार यरूशलेम में रहेगा, क्योंकि वह अन्य राजकुमारों के साथ बैठकर राजा की मेज पर नित्य भोजन करेगा।

मपीबोशेत को दाऊद से दया की उम्मीद नहीं थी, उसने कहा, ''मैं तेरे सामने मरे कुत्ते के समान हूँ।'' परन्तु दाऊद ने योनातन से किए अपने वायदे को स्मरण दिलाया।

हम मपीबोशेत के जीवन से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उसने कुछ महान कार्य नहीं किया, परन्तु दाऊद ने उसके पिता योनातन से वाचा बाँधी थी, इस कारण उसे सारी संपत्ति वापस मिली और उसकी देखभाल करने के लिए सेवक प्राप्त हुए, और जीवन भर के लिए राजा का अतिथि सत्कार भी प्राप्त हुआ। उसी प्रकार यदि हम प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं, तो वह हमारी सुरक्षा करेंगे और हमें अपनी आशीषें देंगे। जिस प्रकार मपीबोशेत ने हर दिन दाऊद की संगति का आनंद प्राप्त किया, उसी प्रकार हम भी हर दिन प्रभु की संगति का आंनद प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर का वचन हमारा भोजन है।

''तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं।'' (भजन संहिता 119:103)।

याद करें :

याकूब 5:11 परमेश्वर अति करुणामय और दयालु हैं।

प्रश्न :

1. मपीबोशेत कैसे पंगुला बना?
2. मपीबोशेत कहाँ था, जब दाऊद ने उसकी खोज की?
3. दाऊद ने मपीबोशेत का कैसे स्वागत किया?
4. दाऊद ने मपीबोशेत के लिए क्या किया?
5. परमेश्वर के लोगों का भोजन क्या है?

पाठ 17

अबशालोम

2 शमूएल अध्याय 14-18

परिचय :

दाऊद के पुत्र अबशालोम का जीवन हमें यह सिखाता है, कि बच्चों को अनुशासित न करने पर क्या होता है।

पाठ :

उन दिनों में एक से अधिक पत्नी रखने की प्रथा थी। यद्यपि दाऊद परमेश्वर का जन था, फिर भी अपने समय की प्रथा के अनुसार, उसकी भी अनेक पत्नियाँ और उनके बच्चे थे। यरूशलेम पहुँचने से पहले ही उसके छ: पुत्र थे। एक दयालु पिता होने के कारण उसने अपने पुत्रों को अनुशासित नहीं किया। उसे अपनी पत्नी, गशूर के राजा की पुत्री का बेटा अबशालोम सबसे प्रिय था, और वह उसकी गलतियों को अनदेखा कर देता था। बाइबल कहती है कि अबशालोम अति रूपवान था और उसमें कोई दोष नहीं था। उसके बाल लंबे और बहुत घने थे, जिन पर वह गर्व करता था। परन्तु उसका स्वभाव बिल्कुल भी सुंदर नहीं था।

अबशालोम अपने भाई अम्नोन से घृणा करता था, और उसने उसे मार डालने का निश्चय किया। उसने अपने सेवकों को इस बात की आज्ञा दी, जिन्होंने उस को पूरा किया। अबशालोम अपने नाना के यहाँ गशूर को भाग गया और तीन वर्ष तक वहाँ रहा, जब तक कि दाऊद ने उसे वापस यरूशलेम आने की अनुमति नहीं दी। परन्तु उसे राजा से मिलने की अनुमति नहीं थी। दो वर्ष के बाद राजा दाऊद ने उसे स्वीकार किया।

दाऊद अबशालोम से बहुत प्यार करता था परन्तु अबशालोम को दाऊद से प्रेम नहीं था। उसने अपने रूप और बातों से लोगों को अपनी तरफ कर लिया। वह महल के द्वार पर खड़ा होकर उन लोगों से

मिलता था जो न्याय पाने के लिए दाऊद के पास आते थे, और उनसे कहता था, कि यदि वह राजा होता तो तुरंत उनका न्याय कर देता। और यदि कोई उसे प्रणाम करने आता तो वह उसे चूम लेता था। शीघ्र ही लोग अबशालोम को अपना उद्धार करने वाला मानने लगे।

एक दिन अबशालोम ने हेब्रोन जाकर, परमेश्वर की आराधना करने के लिए दाऊद से अनुमति माँगी, परन्तु उसने चुपके से राज्य हड़पने की योजना बनाई थी। उसने अपने भेदियों को पूरे देश में यह कहलवा भेजा, कि जब नरसिंगे का शब्द तुम्हें सुनाई दे, तब कहना, "अबशालोम हेब्रोन में राजा हुआ!"

जब दाऊद को पता चला कि अबशालोम ने क्या किया, तब उसने अपने लोगों और सेवकों को लेकर यरूशलेम छोड़ दिया, क्योंकि वह अबशालोम से डर गया। जब उन्होंने किद्रोन का नाला पार किया और जैतून के पहाड़ की चढ़ाई पर पहुँचे। तब दाऊद सिर ढाँके, नंगे पाँव, रोता हुआ और परमेश्वर से प्रार्थना करता हुआ चढ़ने लगा। उसके साथियों ने भी वैसा ही किया। जब वे पहाड़ की चोटी पर पहुँचे, तब दाऊद ने परमेश्वर की आराधना की। फिर उसने दूसरी तरफ उतर के यरदन पार किया।

दाऊद ने अपने लोगों की गिनती की और उन्हें तीन दलों में बाँट दिया, जिनका नेतृत्व योआब, अबीशै और इत्तै ने किया। दाऊद स्वयं युद्ध में जाना चाहता था, परन्तु इन सेनापतियों ने उसे रोक दिया। तब दाऊद ने उनसे विनती की, कि उसके निमित्त उसके पुत्र अबशालोम से कोमलता करना, और यह बात सब लोगों ने सुनी। वे लोग गए और अबशालोम और उसके लोगों से युद्ध करके उन्हें हरा दिया।

अबशालोम खच्चर पर चढ़कर युद्ध भूमि से भाग रहा था, और जैसे ही वह एक बड़े बांज वृक्ष की घनी डालियों के नीचे से गया, उसका सिर उस बांज वृक्ष में अटक गया। वह अधर में लटका रह गया, और उसका खच्चर निकल गया। इसको देखकर किसी मनुष्य ने योआब को बताया, और योआब ने तीन लकड़ी के तीर हाथ में लेकर अबशालोम के हृदय को छेद डाला। फिर योआब ने नरसिंगा फूँका जो विजय को दर्शाता है, इसलिए सब लोग युद्ध रोककर वापस चले गए। लोगों ने

अबशालोम को उतारके एक बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया।

जब दाऊद ने अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुना, तो यह कह कर रोया ''हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे अबशालोम!'' अपने पुत्र के प्रति दाऊद का प्रेम हमें स्मरण दिलाता है कि कैसे हमारे पाप में पड़ जाने पर भी परमेश्वर हम से प्रेम करते हैं। दाऊद ने कहा, ''भला होता कि तेरे स्थान पर मैं मर जाता।'' प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर आए और हमारे लिए अपना प्राण दिया, ताकि हम अनन्त जीवन प्राप्त कर सकें।

बच्चों अपने माता-पिता से नाराज नहीं होना चाहिए जब वे आप को दण्ड देते हैं, क्योंकि ऐसा वह आपकी भलाई के लिए करते हैं। याद रखें कि अबशालोम को उसकी गलती की सज़ा कभी नहीं मिली इस कारण उसका दुखद अंत हुआ।

याद करें :

इफिसियों 6:1 हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।

प्रश्न :

1. दाऊद के परिवार में समस्या क्यों थी?
2. अबशालोम ने लोगों को अपने पिता दाऊद से दूर कैसे किया?
3. किस स्थान पर अबशालोम राजा घोषित हुआ?
4. अबशालोम की हत्या किसने की? और कैसे?
5. दाऊद और अबशालोम के जीवन से हम क्या सीख सकते हैं?

पाठ 18

अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता

1 राजा 13

परिचय :

यह पाठ हमें सिखाता है, कि जब हम परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते तब क्या होता है। दाऊद की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सुलैमान राजा बना, जो अति बुद्धिमान था और परमेश्वर ने उसे आशीष दी। सुलैमान ने परमेश्वर के लिए एक भव्य मंदिर बनवाया, परन्तु जब वह बूढ़ा हुआ तब वह परमेश्वर से दूर चला गया और मूर्तिपूजा में फंस गया। परमेश्वर ने उसको उसके पाप के लिए दंड दिया, और उससे दस गोत्र लेकर उसके सेवक यारोबाम को दे दिए, परन्तु दाऊद के निमित्त परमेश्वर ने दो गोत्र सुलैमान के पुत्र रहूबियाम को दिए। यारोबाम ने दो सोने के बछड़े बनाए और एक को बेतेल और दूसरे को दान में स्थापित किया और लोगों से कहा, इसकी आराधना करो यही ईश्वर है जो तुम को मिस्र से निकाल लाया। वह नहीं चाहता था कि लोग इस्राएल को जाएं इसलिए उसने सोने के बछड़े के लिए पर्व और बलि की घोषणा कर दी। उसने जो याजक चुने वे लेवी गोत्र के नहीं थे।

पाठ :

परमेश्वर यारोबाम से नाराज़ थे, इसलिए परमेश्वर ने उसके और उसके बनाए सोने के बछड़े के विरुद्ध भविष्यद्वाणी करने के लिए अपने एक जन को भेजा। उसने कहा, ''वेदी, हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नामक एक लड़का उत्पन्न होगा, वह उन ऊँचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा। और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी।'' और उसने उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, ''यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी।''

परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, ''उसको पकड़ लो!'' तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका। और वेदी फट गई और उस पर की राख गिर गई। इस प्रकार भविष्यद्वाणी पूरी हुई।

यारोबाम ने घबरा कर परमेश्वर के जन से कहा, ''अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिए प्रार्थना कर कि मेरा हाथ ज्यों का त्यों हो जाए!'' तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया। राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, ''मेरे संग घर चलकर अपना प्राण ठंडा कर और मैं तुझे दान भी दूँगा।''

परमेश्वर के जन ने राजा से कहा, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा मुझे यों आज्ञा मिली है, कि न तो रोटी खाना और न पानी पीना और न उस मार्ग से लौटना जिस से तू जाएगा। फिर अपने घर यहूदा जाने के लिए उसने दूसरा मार्ग लिया।

बेतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था, और उसने अपने बेटों से परमेश्वर के जन के आने की बात सुनी। तब उसने गदहे पर काठी बाँधी और परमेश्वर के जन को ढूँढ़ता हुआ गया और उसे एक बांजवृक्ष के तले बैठा देखकर उसे भोजन करने अपने घर बुलाया। परमेश्वर के जन ने उससे कहा कि परमेश्वर ने उसे इस स्थान पर खाने और पीने के लिए मना किया है। तब बूढ़े नबी ने उससे एक झूठ बोला ''मैं भी एक भविष्यद्वक्ता हूँ, और परमेश्वर के स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, उस पुरुष को अपने घर ला कि वह रोटी खाए और पानी पीए।''

परमेश्वर का जन उस बूढ़े नबी के साथ उसके घर गया और खाया-पीया। परन्तु परमेश्वर ने क्रोधित होकर उसके पास यह वचन भेजा, ''यहोवा यों कहता है, इसलिए कि तूने यहोवा का वचन नहीं माना, और यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया, इस कारण तुझे अपने पुरखाओं के कब्रिस्तान में मिट्टी नहीं दी जाएगी।'' भोजन के बाद परमेश्वर के जन ने गदहे पर काठी बाँधी और यहूदा की ओर चला।

रास्ते में उसे एक सिंह मिला, जिसने उसे मार डाला, परन्तु उसको

खाया नहीं। वह शेर और गदहा दोनों उसके शव के पास खड़े रहे। वहाँ से गुजरने वालों ने यह देखा और नगर में बता दिया। बूढ़े नबी ने यह सुना तब वह समझ गया कि वह परमेश्वर का जन ही होगा, जिसने परमेश्वर के वचन की आज्ञा का पालन नहीं किया। वह उस स्थान को गया, और देखा कि शेर ने न तो उस शव को खाया और न ही गदहे को मारा है। बूढ़े नबी ने शव को गदहे पर लादा और उसे लाकर अपनी कब्र में रखा और उसके लिए विलाप किया। उसने अपने बेटों से कहा, कि उसे भी परमेश्वर के जन की ही कब्र में रखना। फिर उसने घोषणा की, कि यारोबाम के विषय में परमेश्वर के जन की भविष्यद्वाणी भी पूरी होगी।

यारोबाम अपनी बुरी चाल से नहीं फिरा और उसने मूर्तिपूजा के लिए याजक नियुक्त किए। इस कारण परमेश्वर ने उसके पूरे परिवार को नाश कर दिया। हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए। मनुष्य चाहे कुछ भी कहें, हमें वह नहीं करना चाहिए। हमें परमेश्वर की आज्ञाएं प्राप्त हुई हैं, और हमें यह बताया गया है कि हम कैसे उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। हमें अन्य तरीके ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। हमें उनकी नहीं सुनना चाहिए, जो परमेश्वर का वचन नहीं सिखाते।

याद करें :

इफिसियों 5:6 : कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन ही कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न माननेवालों पर भड़कता है।

प्रश्न :

1. यहूदा से आए परमेश्वर के जन के लिए परमेश्वर का संदेश क्या था?
2. यारोबाम ने अपना हाथ क्यों बढ़ाया था?
3. परमेश्वर के जन को झूठा संदेश किसने दिया था?
3. परमेश्वर के जन के साथ क्या हुआ?
5. हम परमेश्वर की इच्छा को कैसे जान सकते हैं?

पाठ 19

कर्मेल पर्वत पर एलिय्याह

1 राजा 18:7-46

परिचय :

जब हम महान भविष्यद्वक्ता एलिय्याह और एलीशा के विषय में सोचते हैं, तब हमें कर्मेल पर्वत भी स्मरण हो आता है, क्योंकि इसी स्थान पर वे रहे और अपने कार्य किए। ''कर्मेल'' शब्द का अर्थ फलदायी बागीचा है। भूमध्य सागर तट के साथ लगे बारह मील की पर्वत शृंखला की सबसे ऊँची चोटी कर्मेल है।

एलिय्याह के दिनों में, इस्राएल का राजा अहाब था और उसकी पत्नी एक अन्यजाति राजा की पुत्री ईज़ेबेल थी, जो रूपवती थी पर बहुत दुष्ट थी। अहाब ने परमेश्वर की आराधना छोड़ दी और सीदोनियों के देवता बाल की आराधना करने लगा। उसने बाल के लिए एक भवन और मूर्ति बनाए। उसके पहले किसी भी राजा ने इस प्रकार परमेश्वर को क्रोधित नहीं किया था। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने अहाब से कहा, ''इस्राएल में मेरे बिना कहे न तो मेंह बरसेगा और न ओस पड़ेगी।'' परमेश्वर ने अकाल भेजा क्योंकि इस्राएली अहाब के पीछे चलकर बाल की आराधना करने लगे।

पाठ :

अकाल के साढ़े तीन वर्षों के पश्चात्, वर्षा के लिए कुछ भी करने के लिए अहाब तैयार था। उसने एलिय्याह को सब स्थानों में ढूँढ़ा पर वह नहीं मिला। जब परमेश्वर लोगों को यह बताना चाहते थे, कि सब कुछ उन के आधीन है, तब उन्होंने एलिय्याह को अहाब के पास यह कहने भेजा, कि सभी इस्राएलियों को कर्मेल पर्वत पर एकत्र करो। और 450 बाल के नबियों और 400 अशेरा के नबियों को भी बुलाओ। एलिय्याह के कहे अनुसार अहाब ने किया और सभी लोगों को कर्मेल पर्वत पर एकत्र किया।

तब एलिय्याह सब लोगों के पास जाकर कहले लगा, ''तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो, और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो।''

लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।

तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, ''यहोवा के नबियों में से केवल मैं ही रह गया हूँ, और बाल के नबी साढ़े चार सौ और अन्य 400 मूर्तिपूजक नबी हैं!'' फिर उसने कहा ''दो बछड़े लाए जाएं और वे अपने लिए एक को बलि के लिए चुन लें, उसके टुकड़े काटकर लकड़ी पर रख दें। और कुछ आग न लगाएं। मैं दूसरे बछड़े को काटकर लकड़ी पर रखूँगा और आग न लगाऊँगा। तब तुम अपने देवता से प्रार्थना करना और मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा, और जो आग गिराकर उत्तर दे वही परमेश्वर ठहरे।'' तब लोगों ने एलिय्याह की बात मान ली।

तब नबियों ने एक बछड़े को काटकर वेदी पर रखा, और भोर से दोपहर तक वेदी के चारों और नाचते, गाते बाल को पुकारते रहे, परन्तु कुछ भी नहीं हुआ। शाम के समय एलिय्याह ने सब लोगों को अपने पास बुलाया और इस्राएल के पुत्रों की गिनती के अनुसार बारह पत्थर छाँटे, उनसे उसने वेदी बनाकर उसके चारों तरफ एक गहरा गड़हा खोद दिया और फिर बछड़े को काटकर वेदी पर रख दिया और कहा, ''चार घड़े पानी भरकर पशु और लकड़ी पर उण्डेल दो।'' फिर उसने गडहे को भी पानी से भर दिया।

भेंट चढ़ाने के समय एलिय्याह नबी ने समीप जाकर कहा, ''हे इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रकट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ। और मैं ने यह सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं। हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन!'' तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी समेत और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गडहे में का जल भी सुख दिया।

यह देखकर लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, ''यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है!''

तब एलिय्याह ने अहाब से कहा कि नीचे शहर को चला जाए क्योंकि उसे भारी वर्षा की आवाज सुनाई दे रही है। फिर वह स्वयं कर्मेल की चोटी पर चढ़ गया और भूमि पर गिरकर अपना मुँह घुटनों के बीच किया, और अपने सेवक से कहा, ''चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि करके देख''। तब उसने चढ़कर देखा और लौटकर कहा, ''कुछ नहीं दिखता।'' एलिय्याह ने कहा, ''फिर सात बार जा!'' सातवीं बार उसने कहा, ''देख समुद्र में से एक छोटा बादल उठ रहा है।'' थोड़ी ही देर में आकाश घटाओं से काला हो गया और आँधी और भारी वर्षा होने लगी। एलिय्याह उठा और यहोवा की शक्ति उस पर ऐसी हुई कि वह पहाड़ से उतरकर अहाब के रथ के आगे आगे यिज्रेल तक दौड़ता चला गया।

यह घटना हमें विश्वास में स्थिर रहना और परमेश्वर के वचन को मानना सिखाती है। केवल जीवित परमेश्वर ही हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे सकते हैं।

याद करें :

1 राजा 18:21 तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो।

प्रश्न :

1. कर्मेल का क्या अर्थ है?
2. कर्मेल पर्वत कहाँ स्थित है?
3. इस्राएलियों के बीच में कौन से दो प्रकार के विश्वास थे?
4. साढ़े तीन वर्षों तक वर्षा क्यों नहीं हुई?
5. एलिय्याह ने सच्चे परमेश्वर के अस्तित्व को कैसे प्रमाणित किया?

पाठ 20

हामान

एस्तेर अध्याय 3-10

परिचय :

पाँचवीं सदी ईसा पूर्व के आरंभ में राजा क्षयर्ष भारत से लेकर इथियोपिया तक राज्य करते थे। उसकी पत्नी, रानी वशती रूपवती थी। उसे आज्ञा न मानने के कारण छोड़ दिया गया और राजा के लिए एक पत्नी की खोज शुरू हुई, जो अगली रानी बनेगी।

पाठ :

राजा क्षयर्ष के राज्य में अन्य प्रांतों से बंदी बनाकर लाए गए अनेक लोग रहते थे। उनमें एस्तेर नाम की एक यहूदी युवती भी थी जो अनाथ थी और अपने चाचा मोर्दकै के साथ रहती थी। एस्तेर भी उन युवतियों में से एक थी, जिन्हें इकट्ठा किया गया, कि राजा अपने लिए उनमें से पत्नी चुन सके। जब राजा ने एस्तेर को देखा तो उसे सबसे अधिक पसंद किया और उसे अपनी रानी बनाया। मोर्दकै राजमहल के फाटक में बैठा करता था, ताकि एस्तेर की खबर रख सके। एक दिन उसने दो लोगों की बातें सुनी, जो राजा को मार डालना चाहते थे। उसने तुरंत एस्तेर को खबर दी, और एस्तेर ने राजा को बताया कि यह बात मोर्दकै के कारण पता चली। दोनों षड्यंत्रकारियों को पकड़कर फाँसी दी गई, और यह वृत्तांत राजा के सामने इतिहास की पुस्तक में लिखा गया।

अगागी हामान, जो राजा का मुख्य सलाहकार था, वह राजा को बहुत प्रिय भी था, इस कारण राजा की आज्ञा थी कि सब लोग हामान को झुककर दण्डवत करेंगे। यहूदी मोर्दकै को छोड़ सभी उसे दण्डवत करते थे। इस बात से हामान क्रोधित हो गया और एक पुरुष की शिकायत करने के बजाय, उसने सारे यहूदियों को मार डालने का निश्चय किया। वह एक योजना बनाकर राजा के पास गया और उसने कहा, ''इस देश में कुछ विदेशी लोग हैं जो राजा के कानून पर नहीं चलते, उनके कानून

भिन्न हैं, और यह अच्छी बात नहीं है, इसलिए उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राजा के राजभंडार के लिए दस हजार किक्कार चाँदी दूँगा।'' राजा ने अपनी अंगूठी उतार कर हामान को दी और कहा कि जैसा जी चाहे वैसा करे।

हामान ने एक घोषणा लिखवाई कि सभी यहूदी बारहवें महीने के तेरहवें दिन को मार डाले जाएँ। उस चिट्ठी पर राजा की अंगूठी की मुहर लगाकर क्षयर्ष के राज्य के 127 प्रान्तों में भेजी गई।

यह सुनकर मोर्दकै वस्त्र फाड़, टाट पहिन, राख डालकर नगर के मध्य जाकर ऊँचे और दुखभरे शब्द से चिल्लाने लगा। एस्तेर और उसकी सहेलियों ने तीन दिन उपवास किया और प्रार्थना की। उसके बाद वह राजकीय वस्त्र पहनकर राजभवन में गई। राजा ने अपने सोने का राजदण्ड उसकी तरफ बढ़ाया और पूछा कि वह क्या चाहती है। उनसे राजा और हामान को अपने महल में भोज के लिए आमंत्रित किया। हामान आनंदित और प्रसन्न हुआ कि रानी ने उसे नेवता दिया है, और वह प्रसन्नतापूर्वक भोज में गया। राजा ने एस्तेर से कहा, ''तेरा क्या निवेदन है?'' उसने कहा कि वह चाहती है कि राजा और हामान कल फिर से भोज में आएं। यह सुनकर हामान और भी गर्व से भर गया। परन्तु जब वह बाहर निकला तो राजमहल के द्वार पर मोर्दकै को देखकर क्रोध से भर गया। उसकी पत्नी और मित्रों ने उसे सलाह दी कि एक फाँसी का खम्भा बनाओ और राजा से मोर्दकै को उस पर फाँसी देने की आज्ञा ले लो। हामान को यह सुझाव अच्छा लगा, और उसने तुरंत ही फाँसी का खम्भा बनवाया।

उस रात राजा को नींद नहीं आई इसलिए उसने आज्ञा दी कि इतिहास की पुस्तक लाई जाए और पढ़कर सुनाई जाए। जब राजा सुन रहा था, तब उसने ध्यान दिया कि मोर्दकै को राजा की जान बचाने के बदले कोई प्रतिफल नहीं दिया था। तब उसने फैसला किया कि मोर्दकै के लिए कुछ किया जाएगा। अगली सुबह जब हामान आया तो राजा ने उससे पूछा, कि यदि वह किसी व्यक्ति का सम्मान करना चाहे तो उसे क्या करना चाहिए। हामान ने सोचा कि राजा उसी का सम्मान करना चाहता है, इसलिए उसने कहा, ''जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, उसे राजा का वस्त्र पहनाया जाए, राजा का मुकुट पहनाया जाए

और राजा के घोड़े पर सवार कर के नगर में फिराया जाए, और उसके आगे-आगे यह प्रचार किया जाए, 'जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।'' हामान सकते में आ गया जब राजा ने उससे कहा, ''जाओ, और जो कुछ तुमने कहा, बिल्कुल वही उस मोर्दकै के साथ करो जो राजभवन के फाटक पर बैठा करता है।''

हामान से जो कहा गया वह उसने किया, परन्तु वह उसके कारण बहुत क्रोधित और दुखी था। जैसे ही वह घर पहुँचा, राजा के खोजे आकर उसे एस्तेर के भोज में बुला ले गए। भोजन के पश्चात् रानी ने अपना निवेदन रखा। उसने विनती की, कि उसको और उसके लोगों को प्राणदान मिले, क्योंकि वे लोग मृत्यु के लिए ठहराए गए हैं। राजा ने पूछा, ''वह कौन है, और कहाँ है, जिसने ऐसा करने का निश्चय किया है?'' एस्तेर ने उत्तर दिया ''वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है!'' तभी एक सेवक ने कहा, कि हामान ने मोर्दकै को लटकाने के लिए एक फाँसी का खम्भा बनाया है। तब राजा ने कहा, ''उसको उसी पर लटका दो।''

हामान शैतान की तस्वीर है, जो परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने का प्रयत्न करता है। हामान ने सोचा कि वह सभी यहूदियों से छुटकारा प्राप्त कर लेगा, क्योंकि जहाँ कहीं वे फैले थे उन सब प्रांतों में क्षयर्ष का शासन था। परमेश्वर ऐसा कभी भी होने नहीं देंगे। उन्होंने शैतान के आक्रमण को आशीषों में परिवर्तित कर दिया।

याद करें :

नीतिवचन 11:10 जब धर्मियों का कल्याण होता है, तब नगर के लोग प्रसन्न होते हैं।

प्रश्न :

1. राजा क्षयर्ष का जीवन काल और शासन काल कौन सा था?
2. राजभवन में हामान की पदवी क्या थी?
3. वह कौन सी महान भलाई थी जो मोर्दकै ने राजा से की?
4. हामान यहूदियों से क्यों घृणा करता था?
5. एस्तेर ने किस प्रकार अपने लोगों को बचाया?

पाठ 21

गेहजी

2 राजा अध्याय 4-5

परिचय :

एलिय्याह के पश्चात् आने वाले भविष्यद्वक्ता एलीशा का सेवक था गेहजी। हमने पहले गेहजी के बारे में सीखा था, जब एक स्त्री एलीशा के पास अपने पुत्र की मृत्यु के बारे में बताने आई थी, तब एलीशा ने गेहजी से कहा था कि छड़ी लेकर जा और उस बालक के मुँह पर रख देना। परन्तु वह बालक तभी जीवित हुआ जब एलीशा ने आकर उसके लिए प्रार्थना की।

पाठ :

फिर एक बार हमने गेहजी के बारे में सुना था जब नामान कोढ़ी के विषय में हमने सीखा था। नामान अराम की सेना का सेनापति था, परन्तु वह कोढ़ी था। उसकी पत्नी की दासी एक यहूदी लड़की थी, जिसने अपनी मालकिन को इस्राएल के महान भविष्यद्वक्ता के बारे में बताया, जो नामान को उसके रोग से मुक्त कर सकता है।

नामान दस किक्कार चाँदी, छः हजार टुकड़े सोना और दस जोड़े कपड़े और अराम के राजा से पत्र लेकर इस्राएल के राजा के पास गया। उस पत्र में लिखा था, ''मैंने नामान नामक अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिए भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे।'' इस्राएल का राजा परेशान हो गया और सोचने लगा कि अराम का राजा युद्ध के लिए कारण ढूँढ़ता है। उसने अपने वस्त्र फाड़े। एलीशा ने इसके विषय में सुना और कहला भेजा कि उसे मेरे पास भेज दो।

नामान अपने रथ पर एलीशा के घर गया, परन्तु नबी उससे मिलने बाहर नहीं आया। उसने गेहजी से कहला भेजा, कि नामान जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी मारे तो वह रोग मुक्त हो जाएगा। यह सुनकर नामान बहुत क्रोधित हुआ, परन्तु उसके सेवकों ने उसे भविष्यद्वक्ता की

आज्ञा का पालन करने के लिए मना लिया। उसने आज्ञा मानी और वह स्वस्थ हो गया।

नामान इतना अधिक खुश था कि वह लौटकर एलीशा के घर गया कि उसे भेंट दे सके। उसे समझ आ गया था कि केवल एक ही परमेश्वर है जो इस्राएल का परमेश्वर है। एलीशा ने कुछ भेंट नहीं ली और नामान को वापस भेज दिया। इस बात से गेहजी खुश नहीं था। उसने सोचा कि मेरे स्वामी ने नामान से कोई भेंट नहीं ली, परन्तु मैं उससे कुछ न कुछ ले लूँगा। यह सोचकर वह नामान के पीछे दौड़कर गया।

जब नामान ने गेहजी को दौड़कर आते देखा तो अपने रथ से उतर गया और पूछा, ''सब कुशल क्षेम तो है?'' उसने कहा, ''हाँ, सब कुशल है, परन्तु मेरे स्वामी ने मुझे यह कहने को भेजा है कि 'एप्रैम के पहाड़ी देश से नबियों के चेलों में से दो जवान मेरे यहाँ अभी आए हैं, इसलिए उनके लिए एक किक्कार चाँदी और दो जोड़े वस्त्र दे।'' नामान ने तुरंत अपने सेवक के हाथ से दो किक्कार चाँदी और दो जोड़े वस्त्र एलीशा के घर भेज दिया। वहाँ गेहजी ने उन वस्तुओं को लेकर घर में रख दिया और जाकर एलीशा के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने उससे पूछा कि वह कहाँ गया था। उसने कहा, ''कहीं नहीं गया।''

एलीशा क्रोधित और दुखी हुआ, उसने गेहजी से कहा ''जब वह पुरुष तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा, तब से वह पूरा हाल मुझे मालूम था। क्या यह समय चाँदी या वस्त्र या जैतून या दाख की बारियाँ, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और दास-दासी लेने का है? इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा।'' तुरंत ही गेहजी कोढ़ी हो गया।

एलीशा ने अपने अच्छे कार्य के बदले प्रतिफल नहीं चाहा। परमेश्वर के दान हम धन देकर खरीद नहीं सकते। गेहजी ने नामान के धन को देखकर उसका लालच किया, इसलिए उसने नामान से और अपने स्वामी से झूठ बोला। परन्तु हम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते क्योंकि वो सब कुछ देख सकते हैं। इसलिए गेहजी पर भयंकर दण्ड आया। याद, रखें, परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं आप उन्हें धोखा नहीं दे सकते।

याद करें :

निर्गमन 20:17 तू अपने पड़ोसी के घर का या उसके किसी भी वस्तु का लालच न करना।

प्रश्न :

1. गेहजी कौन था?
2. नामान ने एलीशा के बारे में कैसे सुना?
3. कोढ़ से मुक्त होने के लिए, एलीशा ने नामान से क्या करने को कहा?
4. गेहजी का पाप क्या था?
5. उसको क्या सजा मिली?

पाठ 22

नाबोत

1 राजा 21

परिचय :

इस्राएल का राजा अहाब सामरिया पर भी राज्य करता था। उसकी पत्नी ईज़ेबेल सीदोनी राजा की बेटी थी। अहाब परमेश्वर से दूर हो गया और बाल की आराधना करने लगा और मूर्तियों के लिए मंदिर बनवाए। इस्राएल के सभी राजाओं से अधिक पाप अहाब ने किए।

पाठ :

नाबोत नाम के एक यिज्रेली की दाख की बारी, शोमरोन के राजा अहाब के महल के पास यिज्रेल में थी। अहाब उस बारी को लेकर उसमें साग-पात लगाना चाहता था। परन्तु नाबोत ने उसे न बेचा न ही उसके बदले बेहतर बारी ली। उसने कहा कि वह अपने पुरखाओं की जमीन किसी को देना नहीं चाहता। इससे आहाब नाराज हो गया, और मुँह फेरकर बिस्तर पर लेट गया और भोजन नहीं किया। उसकी पत्नी ने आकर पूछा कि क्या बात है। जब उसे बात का पता चला तो उसने अपने पति से कहा, कि उठकर भोजन करो, दाख की बारी मैं तुम्हें दिलवा दूँगी।

ईज़ेबेल ने अहाब के नाम से छाप लगा पत्र लिखकर पुरनियों और रईसों के पास भेज दिया, जो नाबोत के पड़ोसी थे। उसमें उसने लिखा कि उपवास का प्रचार करो और नाबोत को ऊँचे स्थान पर बैठा कर, दो नीच लोगों को उस पर दोष लगाने को कहो, जो यह कहें कि नाबोत ने परमेश्वर की और अहाब राजा की निंदा की है। इस तरह के अपराध की सजा जल्दी मिलेगी और वह पथराव करके मार डाला जाएगा।

उन रईसों ने बिल्कुल वैसा किया जो उन से कहा गया था और नाबोत पथराव करके मार डाला गया। फिर उसने राजा के पास जाकर

कहा, कि उठकर नाबोत की बारी ले ले, क्योंकि नाबोत मर गया है।

परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को संदेश दिया और उसने अहाब के पास आकर कहा, ''क्या तूने हत्या की और अधिकारी भी बन गया? अब सुनो यहोवा क्या कहता है। जिस स्थान पर कुत्तों ने नाबोत का लहू चाटा, उसी स्थान पर कुत्ते तेरा लहू चाटेंगे।''

अहाब ने पूछा, ''हे मेरे शत्रु! क्या तू ने मेरा पता लगाया है?'' उसने कहा, ''हाँ, पता लगाया है, क्योंकि जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, उसे करने के लिए तूने अपने को बेच डाला है। इसलिए अब तुझ पर और तेरे घराने पर विपत्ति आएगी।''

तब अहाब ने अपने वस्त्र फाड़े और टाट लपेटकर उपवास और प्रार्थना करने लगा। तब परमेश्वर ने कहा, ''क्योंकि अहाब नम्र बन गया है, मैं वह विपत्ति उसके जीते जी उस पर न डालूँगा, परन्तु उसके पुत्र के दिनों में, मैं उसके घराने पर वह विपत्ति भेजूँगा।''

भविष्यद्वाणी पूरी हुई। उसने कष्ट नहीं उठाए परन्तु एक युद्ध में वह अपने रथ पर मारा गया और उसे वापस यिज्रेल में लाया गया। जब वे उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ नाबोत की हत्या हुई थी, वहाँ कुत्तों ने अहाब का लहू चाटा। उसके बाद राजा येहू ने ईज़ेबेल को ऊँची खिड़की से गिरवा दिया और कुत्तों ने उसे खा लिया।

नाबोत एक इस्राएली था जिसने व्यवस्था की इस आज्ञा का पालन किया, कि अपने पुरखाओं की जमीन अन्यजातियों के हाथ मत बेचना। इतिहास के अनुसार नाबोत एक शहीद हुआ जिसने व्यवस्था का पालन किया था। परन्तु अहाब और ईज़ेबेल से हमें शिक्षा मिलती है कि हम अपने पड़ोसी की वस्तु का लालच न करें।

याद करें :

1 पतरस 3:14 यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो, पर लोगों के डराने से मत डरो।

प्रश्न :

1. इस्राएल के सभी राजाओं में सबसे अधिक पाप किसने किया?

2. नाबोत ने अपने दाख की बारी को बेचने से इन्कार क्यों किया?
3. ईज़ेबेल ने अपने पति के लिए नाबोत की बारी कैसे हासिल की?
4. अहाब के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय क्या था?
5. नाबोत के जीवन से हम क्या सीखते हैं?

पाठ 23

सामरिया में दुर्भिक्ष

2 राजा 6:24-33; अध्याय 7

परिचय :

सामरिया यरूशलेम के पूर्व की ओर पचास किलोमीटर की दूरी पर है। एलीशा के समय में, सामरिया में इस्राएल के राजा अहाब का पुत्र योराम शासन करता था। अपने पिता अहाब की तरह उसने और उसके लोगों ने मूर्तिपूजा जारी रखी और परमेश्वर ने उनको दण्ड दिया। अराम के राजा बेन्हदद की सेना ने सामरिया को घेर लिया और तब सामरिया में बड़ा अकाल पड़ा।

पाठ :

सामरिया में अकाल इतना भयंकर था कि भोजन वस्तु बहुत महंगे हो गए। एक दिन जब राजा शहरपनाह पर टहल रहा था, तब एक स्त्री ने पुकारकर उससे कहा, ''हे प्रभु, इस स्त्री ने मुझ से कहा था, कि मुझे अपना बेटा दे, कि आज हम उसे खा लें और कल हम मेरे बेटे को खा लेंगे। तब मेरे बेटे को पकाकर हमने खा लिया, और अब इसने अपने बेटे को छिपा दिया।''

यह सुनकर राजा ने अपने वस्त्र फाडे, और टाट ओढ़ लिया। उसने कहा, कि हम पर यह विपत्ति एलीशा के कारण पड़ी है, मैं उसको अवश्य मार डालूँगा।

एलीशा नबी जानता था कि क्या हो रहा है, इसलिए उसने अपने साथ बैठे पुरनियों से कहा, ''देखो, राजा मुझे मार डालना चाहता है, जब राजा का दूत आए तब उसे अन्दर आने मत देना, क्योंकि राजा उसके पीछे-पीछे आएगा।''

एलीशा जानता था कि परमेश्वर दया करने वाला है। उसने कहा, ''कल इस समय शोमरोन के फाटक में बहुतायत से भोजन उपलब्ध

होगा।''

तब एक अधिकारी ने ठठ्ठा करके कहा, ''चाहे यहोवा आकाश के झरोखे खोले, तौभी क्या यह हो सकेगा!''

एलीशा ने उसको उत्तर दिया, ''सुन, तू यह अपनी आँखों से देखेगा, परन्तु उस अन्न में से कुछ खाने न पाएगा।''

सामरिया के फाटक पर चार कोढ़ी बैठे थे। कोढ़ियों को शहर के अंदर आने की अनुमति नहीं होती थी। अकाल के कारण उन्हें भोजन नहीं मिल रहा था, इसलिए उन्होंने कहा, कि यहाँ हम भूखे मर रहे हैं, चलो अराम की छावनी में चलें। यदि वो हमें जीवित रखेंगे तो ठीक है, वरना मरना तो है ही। तब वे शाम को अराम की छावनी में गए, तो देखा कि अरामी अपना सब कुछ छोड़कर भाग गए हैं।

एलीशा की भविष्यद्वाणी पूरी हो रही थी। परमेश्वर ने युद्ध रोकने के लिए अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना के आने की सी आवाज़ सुनाई और वे भयभीत होकर अपना सब कुछ छोड़कर भाग गए। कोढ़ियों ने डेरों में घुसकर मनमाना खाया और सोना चाँदी और कपड़े ले कर छिपा दिए। फिर वे आपस में कहने लगे, ''हम जो कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है। यह आनंद का समाचार हमें सबको बताना चाहिए। चलो हम राजा के घराने को यह बात बता दें।''

तब उन्होंने जाकर नगर के चौकीदारों को सब कुछ बता दिया, और उन्होंने राजमहल के भीतर समाचार दे दिया। राजा को संदेह था कि यह अरामियों की कोई चाल है। हो सकता है कि वे छिपकर आक्रमण करें। इसलिए उसने दो घुड़सवारों को भेजा कि वास्तविकता का पता करें। उन्होंने पता लगाया कि सचमुच वे भाग गए थे, और यरदन नदी तक रास्ते में उनका सामान पड़ा था जिन्हें फेंककर वे भागे थे। तब लोगों ने निकलकर अराम के डेरों को लूट लिया और उन्हें बेचने लगे। एलीशा के वचन के अनुसार दो सआ जौ, और एक सआ मैदा एक-एक शेकेल में बिकने लगा, और उसी अधिकारी को राजा ने फाटक का अधिकारी ठहराया जिसने एलीशा का ठठ्ठा उड़ाया था। भीड़ इतनी अधिक थी, कि वह लोगों के पाँवों के नीचे दबकर मर गया। उसने वह आश्चर्यकर्म

तो देखा परन्तु उसमें से कुछ खाने न पाया।

एलिय्याह और एलीशा ने अहाब और उसके लोगों को चेतावनी दी थी कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानेंगे तो कष्ट उठाएंगे। परन्तु जब परमेश्वर के लोग उनको पुकारते हैं, तब वह आश्चर्यकर्म करते हैं। हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए, चाहे हमारे आस-पास के लोग न करें। हमें परमेश्वर के प्रति विश्वस्त होना चाहिए। उन कोढ़ियों की तरह हमें भी आनन्द का समाचार दूसरों को सुनाना चाहिए।

याद करें :

2 राजा 7:9 हम अच्छा नहीं कर रहे हैं, यह आनंद के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते।

प्रश्न :

1. सामरिया में इतना भयंकर अकाल क्यों पड़ा?
2. इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र कब फाड़े?
3. अरामी सेना छावनी छोड़कर क्यों भाग गई?
4. अरामियों के भाग जाने की खबर सबसे पहले किसे लगी?
5. इस घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ 24

बेलशस्सर का भोज

दानिय्येल 5

परिचय :

इस्राएली लोग अनेक बार परमेश्वर से दूर चले गए, और उन्हें बन्धुआई में जाने देने के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। इस बार, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को जीत लिया, और यहूदा के अधिकांश लोगों को बंधुआ बना के बाबुल ले गया। बाद में नबूकदनेस्सर परमेश्वर का भय मानने लगा, परन्तु उसके पुत्र (पोता) ने नहीं माना। आइए देखें कि उसके साथ क्या हुआ।

पाठ :

बेलशस्सर अपने पिता की तरह जीवित परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता था। जब वह राजा बना तब उसने एक बड़ा भोज किया, और अपने हज़ारों अधिकारियों को आमंत्रित किया। उसने आज्ञा दी, कि सोने–चाँदी के जो पात्र उसके पिता नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मंदिर में से निकाले थे, उन्हें लाया जाए। उसने और उसके अतिथियों ने उसमें खाया–पीया, और सोने, चाँदी, लोहे, पीतल और लकड़ियों से बने देवताओं की स्तुति करने लगे। अचानक, मनुष्य के हाथ की सी कई उंगलियाँ निकलकर दीवार पर कुछ लिखने लगीं। किसी को समझ में नहीं आया कि क्या लिखा गया है। राजा भयभीत हो गया और बहुत घबरा गया।

राजा ने अपने राज्य के तंत्रियों, कसदियों, पंडितों और भावी बताने वालों को बुलवाया, कि दीवार पर लिखा पढ़ सकें। परन्तु कोई भी पढ़ नहीं पाया। तब रानी (नबूकदनेस्सर की पत्नी) आई और दानिय्येल के विषय में उसे बताया जो उसके पिता नबूकदनेस्सर के समय में परमेश्वर के रहस्यों का अर्थ बताता था।

दानिय्येल को बुलवाया गया। राजा ने उससे पूछा, ''क्या तू वही

दानिय्येल है, जो मेरे पिता नबूकदनेस्सर राजा द्वारा यहूदा देश से लाए हुए, यहूदी बँधुओं में से है? मैंने सुना है कि तुझ में उत्तम बुद्धि है क्योंकि ईश्वर का आत्मा तुझ में रहता है। यदि तुम दीवार पर लिखे हुए को पढ़ कर उसका अर्थ बता सको तो मैं तुम्हें प्रतिफल दूँगा। बैंजनी रंग का वस्त्र, और सोने की कंठमाला तुझे पहनाई जाएगी और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा।''

दानिय्येल ने कहा, ''मुझे कुछ प्रतिफल नहीं चाहिए, परन्तु मैं इसे पढ़कर समझा दूँगा। हे राजा, तू अपने पिता के बारे में जानता है, कि कैसे उसने अपनी सामर्थ पर घमंड किया। तब परमेश्वर ने सात वर्षों के लिए उसे पदच्युत किया, और फिर उसने उस जीवने परमेश्वर पर विश्वास किया, जो समस्त विश्व का अधिकारी है। उसने अपना पाठ सीखा, परन्तु तुम ने उससे कुछ नहीं सीखा। तुमने अपना हृदय कठोर किया और परमेश्वर को महिमा नहीं दी। इन शब्दों का अर्थ यह है कि, परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तू तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है, तेरा राज्य बाँटकर मादियों और फारसियों को दिया गया है।''

उस रात बेलशस्सर मार डाला गया और मादी राजा दारा गद्दी पर बैठ गया। जब हम परमेश्वर के तराजू में तौले जाते हैं, तब हम सब हलके निकलेंगे। परमेश्वर की दया और प्रभु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही हम न्याय से बच सकते हैं।

याद करें :

दानिय्येल 5:27 तू तराजू में तौला गया और हल्का पाया गया है।

प्रश्न :

1. बेलशस्सर कौन था?
2. परमेश्वर ने उसे कैसे संदेश भेजा?
3. राजा को दानिय्येल के बारे में किसने बताया?
4. हस्तलेख का क्या अर्थ था?
5. दानिय्येल उस संदेश का अर्थ क्यों बता सका?
6. राजा ने दानिय्येल को किस प्रतिफल का वायदा किया था?
7. बेलशस्सर के साथ क्या हुआ?

(नया-नियम)

पाठ 25

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

लूका 3:1-22 यशायाह 40:3.

परिचय :

बच्चों, अभी तक हमने पुराने नियम की घटनाएं देखीं। अब आगे हम नए नियम के सुसमाचारों में से सीखेंगे। प्रभु यीशु के जन्म के समय कनान या पलिश्तीन देश रोमी राज्य का हिस्सा था। रोम में तिबिरियुस कैसर के शासन काल में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपना सेवा कार्य आरंभ किया।

जिस प्रकार मिस्री राजाओं को फिरौन कहा जाता था, उसी प्रकार रोमी सम्राट कैसर कहलाते थे। पलिश्तीन तीन ज़िलों में बँटा हुआ था-यहूदिया, सामरिया, और गलील।

पाठ :

जकर्याह का पुत्र यूहन्ना अधिकांश समय जंगलों में उपवास और प्रार्थना में बिताता था, और जब वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, तब यरदन और उसके आसपास के प्रदेशों में प्रचार करने लगा। उसने कहा, ''मन फिराओ और बपतिस्मा लो कि तुम्हारे पाप क्षमा किए जाएँ।'' इस प्रकार यशायाह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई कि ''देखो मैं अपने दूत को तेरे आगे मार्ग तैयार करने के लिए भेजता हूँ।'' किसी की पुकार सुनाई देती है, ''जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिए एक राजमार्ग चौरस करो।''

यूहन्ना ने यहूदिया और उसके आसपास के स्थानों में प्रचार करके कहा, ''मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।'' वह ऊँट के बालों का वस्त्र पहनता था और उस पर चमड़े का पटुका बाँधता था और उसका भोजन टिड्डियाँ और बनमधु था। यरूशलेम और यहूदिया

से भीड़ की भीड़ पापों से मन फिरा के यूहन्ना से बपतिस्मा लेने गई।

यूहन्ना ने उनसे कहा कि उनको अपने पापों से पश्चाताप करना होगा। तब उनका जीवन बदल जाएगा। यदि नहीं, तो उनका जीवन उस वृक्ष के समान हो जाएगा जो फल नहीं देता और फिर काटकर जला दिया जाता है। यूहन्ना की कही बातें सुनकर लोग सोचने लगे कि यही मसीह होगा, जिसकी भविष्यद्वाणी की गई थी, तो यूहन्ना ने उन सबसे कहा, ''मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है, मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोल सकूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।''

यूहन्ना ने अपने विषय में बात नहीं की, परन्तु प्रभु यीशु मसीह के आगमन के विषय में कहा। वह प्रभु यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था।

यूहन्ना जब उन्हें बपतिस्मा दे रहा था, जिन्होंने उस के वचन पर विश्वास किया था, तब प्रभु यीशु मसीह यूहन्ना के पास आए कि उससे बपतिस्मा ले। प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र और निष्पाप होने पर भी उन मनुष्यों के समान होना चाहते थे, जिन्हें बचाने आए थे। जब उन्होंने बपतिस्मा लिया, तब पवित्र आत्मा कबूतर के समान उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।'' तब यूहन्ना जान गया कि उसने किसे बपतिस्मा दिया है, इसलिए उसने गवाही दी, ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।'' (यूहन्ना 1:29)।

याद करें :

यूहन्ना 1:29 देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को क्यों भेजा?
2. वह ''बपतिस्मा देने वाला'' क्यों कहलाया?
3. लोगों के लिए यूहन्ना का संदेश क्या था?
4. प्रभु यीशु के बपतिस्मा के समय किसकी आवाज़ सुनाई दी?
5. यूहन्ना ने प्रभु यीशु के बारे में क्या कहा?

पाठ 26

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु

मत्ती 14:1-12

परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रभु यीशु के लिए मार्ग तैयार करने आया था। आज हम सीखेंगे कि उसकी मृत्यु कैसे हुई।

पाठ :

यूहन्ना के दिनों में गलील का शासक रोमी हेरोदेस था। वह अच्छा मनुष्य नहीं था और यूहन्ना ने उसे चेतावनी दी थी। हेरोदेस ने अपने भाई की पत्नी हेरोदियास को अपने साथ रखा और यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था कि उसे रखना तेरे लिए उचित नहीं है। इसलिए उसने यूहन्ना को जेलखाने में डाल दिया था।

जेलखाने से यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रभु यीशु के पास यह पूछने भेजा, ''क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?''

यूहन्ना ने सोचा होगा कि यदि प्रभु यीशु ही उद्धारकर्ता हैं, तो फिर उसे जेलखाने में क्यों दुख उठाना पड़ रहा है। यद्यपि उसने प्रभु यीशु को ''परमेश्वर का मेम्ना'' कहा, परन्तु वह भूल गया कि उस मेम्ने की मृत्यु के पश्चात् ही उसके विश्वासी उसकी महिमा के भागीदार होंगे। प्रभु यीशु ने उन से कहा, कि तुमने जो देखा है, वह जाकर यूहन्ना को बता दो, कि अंधे देखते हैं, कोढ़ी रोगमुक्त हो जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। फिर प्रभु ने कहा, ''धन्य है, वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।''

अपना जन्मदिन मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने मित्रों को बुलाया और उस उत्सव में हेरोदियास की बेटी सलोमी ने अपना नाच दिखाकर हेरोदेस को इतना खुश किया कि उसने उससे कहा, ''जो कुछ तू

माँगेगी, मैं तुझे दूँगा। उसने जाकर अपनी माता से पूछा। हेरोदियास जो यूहन्ना से नफरत करती थी, बोली कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मँगवा ले। हेरोदेस दुखी हुआ, पर वह सबके सामने वचन दे चुका था, इस कारण उसने इस बात की आज्ञा दे दी। यूहन्ना का सिर थाल में लाया गया। उसके चेलों ने जेलखाने से उसके शव को ले जाकर गाड़ दिया और फिर जाकर जो कुछ हुआ उसका समाचार प्रभु यीशु को दिया।

प्रभु यीशु ने उन लोगों से कहा, जो उसके पास खड़े थे, ''मैं तुम से कहता हूँ, जितने स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं हुआ।''

याद करें :

2 कुरिन्थियों 4:17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।

प्रश्न :

1. हेरोदेस ने यूहन्ना को जेलखाने में क्यों डाला?
2. यूहन्ना ने अपने चेलों को प्रभु यीशु के पास क्यों भेजा?
3. हेरोदेस ने यूहन्ना को तुरंत क्यों नहीं मरवाया?
4. हेरोदेस ने सलोमी से क्या वायदा किया था?
5. प्रभु यीशु ने यूहन्ना के विषय में लोगों से क्या कहा?

पाठ 27

पापिनी स्त्री

लूका 7:36-50

परिचय :

प्रभु यीशु के समय में यहूदियों के दो गुट थे-फरीसी और सदूकी। सदूकी लोग स्वर्गदूतों, आत्माओं और मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे। परन्तु फरीसी इन सब बातों पर विश्वास करते थे। (प्रेरितों 23:8)। सदूकी लोग जीवन का आनंद उठाने में विश्वास रखते थे। फरीसी लोग व्यवस्था का पालन बड़ी सावधानी से करने में विश्वास रखते थे। सामान्य लोगों की संगति में अशुद्ध हो जाने के भय से वे हमेशा उनसे अलग ही रहते थे।

पाठ :

शमौन नाम के एक फरीसी के घर में प्रभु यीशु को भोजन करने के लिए बुलाया गया। प्रभु आए और भोजन करने बैठे। उन दिनों में लोग भोजन करने के लिए दीवान पर आराम से पैर फैलाकर बैठते थे, और उनके सामने नीची मेज़ों पर खाना परोसा जाता था। एक पापिनी स्त्री ने जब सुना, कि प्रभु यीशु शमौन के घर आए हैं, तब वह संगमरमर के पात्र में इत्र लेकर शमौन के घर आई, जहाँ सब जानते थे कि वह एक पापिनी स्त्री है। वह प्रभु के पाँवों के पास पीछे खड़ी होकर रोती हुई उसके पाँवों को आँसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी, और उसके पाँव बार-बार चूमकर उन पर इत्र मला।

शमौन ने यह देखकर अपने मन में सोचा कि यदि प्रभु यीशु भविष्यद्वक्ता होते तो अवश्य जान जाते कि यह स्त्री कितनी पापिनी है,, और उसे छूने से स्वयं को अशुद्ध न करते। प्रभु यीशु ने उस के मन के विचारों को जानकर उससे एक दृष्टांत कहा।

प्रभु ने कहा, ''किसी महाजन के दो देनदार थे। एक पर पाँच सौ

और दूसरे पर पचास दीनार का कर्ज था। दोनों ही उसे वापस न कर सके, तब महाजन ने दोनों का कर्ज माफ कर दिया। अब बताओ कि उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?''

शमौन ने उत्तर दिया, ''वह, जिसका अधिक माफ किया गया।'' प्रभु ने उससे कहा, ''तू ने ठीक समझा। क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया, और तू ने मुझे पाँव धोने के लिए पानी नहीं दिया, परन्तु इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगोकर अपने बालों से पोंछा। तू ने मुझे चूमा न दिया, परन्तु जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पैरों को चूमना न छोड़ा। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है। इसलिए मैं तुझसे कहता हूँ, कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया।''

फिर प्रभु ने उस स्त्री से कहा, ''तेरे पाप क्षमा हुए। तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा और फिर पाप मत करना।'' प्रभु यीशु पर उसका विश्वास महान था। आँसू बहाकर उसने अपने पापों से पश्चाताप किया। हमें भी इसी तरह की नम्रता, प्रेम और विश्वास के साथ प्रभु यीशु के पास आना चाहिए।

याद करें :

इफिसियों 2:8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर का दान है।

प्रश्न :

1. फरीसियों और सदूकियों में क्या अन्तर है?
2. शमौन को अपने अतिथि का स्वागत कैसे करना चाहिए था?
3. उस स्त्री ने प्रभु यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया?
4. उसके आँसू क्या बताते हैं?
5. हमें अपने पापों की क्षमा कैसे मिल सकती है?

पाठ 28

दाख की बारी में मजदूर

मत्ती 20:1-16

परिचय :

पलिश्तीन देश में अंगूर के बगीचे बहुत अधिक होते हैं, और उन में बहुत मजदूरों की आवश्यकता होती है। यहूदी लोग सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक कार्य करते हैं। यदि किसी दिन अधिक कार्य होता है, तो बाजार से और अधिक लोगों को बुलाकर मज़दूरी पर लगाते हैं। आज हम सीखेंगे कि किस प्रकार मनुष्य के सोच की तुलना परमेश्वर के सोच से नहीं की जा सकती।

पाठ :

एक दिन एक दाख की बारी के मालिक ने बहुत सुबह अपनी बारी में मजदूर लगाए। उसने उन्हें एक दिन का एक दीनार मजदूरी पर ठहराया। फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर बाजार में कुछ लोगों को बेकार खड़े देखा, और उन्हें भी अपनी बारी में भेजा, और कहा कि जो कुछ ठीक है तुम्हें दूँगा।

वह स्वामी फिर एक घंटा दिन रहे निकलकर गया और दूसरों को खड़े पाया, और उन्हें भी काम पर लगा दिया।

साँझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, ''मजदूरों को बुलाकर, पिछलों से लेकर पहलों तक उन्हें मजदूरी दे दे।'' भण्डारी ने अंत में आकर एक घंटा मजदूरी करने वालों को एक-एक दीनार दिया और वे प्रसन्न हुए, और जो पहले आए, उन्हें भी एक-एक दीनार मिला, और वे कुडकुड़ा कर कहने लगे, ''हम ने दिन भर की धूप सहकर मजदूरी की, और उन्हें और हमें एक जैसी मजदूरी क्यों प्राप्त हुई?''

यह सुनकर बारी के स्वामी ने कहा, ''मैंने तुमसे जो मजदूरी ठहराई

थी, वह दी है, दूसरों को कितनी मिली और वे इसकी योग्यता रखते हैं या नहीं, उसकी चिन्ता तुम मत करो। परमेश्वर के राज्य में, जो पिछले हैं वे पहले होंगे, और जो पहले हैं वे पिछले होंगे।''

परमेश्वर का प्रतिफल देना, मनुष्यों के समान नहीं है। परमेश्वर का अपना स्तर है, और वह अपनी दया के धन के अनुसार प्रतिफल देते हैं।

याद करें :

मत्ती 20:4 तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूँगा।

प्रश्न :

1. मजदूरी पर रखे जाने के लिए लोग कहाँ एकत्र होते थे?
2. हर एक मजदूर के साथ कितनी मजदूरी तय हुई थी?
3. कौन से मजदूर अपनी मजदूरी से बहुत प्रसन्न हुए होंगे?
4. सुबह से काम पर लगे मजदूर क्यों अप्रसन्न हुए?
5. इस दृष्टांत से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ 29

राजा के पुत्र का विवाह

मत्ती 22:1-17

परिचय :

प्रभु यीशु मसीह दृष्टांतों के द्वारा लोगों को सिखाते थे। आज हम एक दृष्टांत के द्वारा देखेंगे कि स्वर्ग का राज्य कैसा है।

पाठ :

एक राजा ने अपने पुत्र के विवाह की तैयारी की। हम सब जानते हैं कि विवाह का भोज कैसा होता है। कल्पना कीजिए कि एक राजकुमार के विवाह का भोज कैसा होगा? बहुत सारे अतिथियों को निमंत्रित किया गया, और बहुत अधिक मात्रा में भोजन तैयार किया गया। राजा के पुत्र के विवाह में निमंत्रण प्राप्त होना आदर की बात है। परन्तु राजा के अतिथि नहीं आए।

राजा ने सेवकों को भेजा कि उन्हें भोज के विषय में बताकर फिर से बुलाएं, परन्तु कोई नहीं आया। उनके पास बहुत से बहाने थे, किसी ने काम का और किसी ने व्यापार का बहाना बनाया। कुछ ने दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला।

जब राजा ने यह सुना तो बहुत ही दुखी और क्रोधित हुआ। उसने कुछ और दासों को भेजा कि जाकर सड़कों और चौराहों से लोगों को लेकर आओ। सेवकों ने जाकर भले, बुरे, अमीर, और गरीब, सब तरह के लोगों को इकट्ठा किया और विवाह का घर अतिथियों से भर गया। अतिथियों को राजा की तरफ से दिया गया विवाह का वस्त्र पहनना आवश्यक था।

जब राजा अतिथियों से मिलने भीतर आया, तब उसने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जिसने विवाह का वस्त्र नहीं पहना था। राजा ने उससे पूछा कि उसने विवाह का वस्त्र क्यों नहीं पहना, जिसका उसके पास

कोई उत्तर नहीं था। राजा बहुत क्रोधित हुआ और वह व्यक्ति बाहर निकाल दिया गया।

यह दृष्टांत हमें यह सिखाने के लिए दिया गया है कि, परमेश्वर की संगति के लिए पहला निमंत्रण किसे प्राप्त हुआ था। यह पहले इस्राएलियों को मिला था, जिसे उन्होंने ठुकरा दिया। तब परमेश्वर ने संसार की सारी जातियों में से लोगों को निमंत्रण दिया और अनेक लोग आए। उनमें से हर एक ने परमेश्वर के संदेश को स्वीकार किया। एक ने नहीं किया और उसे बाहर निकाल दिया गया। विवाह का वस्त्र, धार्मिकता का वस्त्र है, जो प्रभु के पास आने वाले को पहनना है। जो कुछ प्रभु हमें देते हैं हमें वह स्वीकार करना चाहिए।

याद करें :

यशायाह 61:10 मैं यहोवा के कारण अति आनंदित होऊँगा, क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए।

प्रश्न :

1. निमंत्रित अतिथि भोज में क्यों नहीं आए?
2. निमंत्रण को स्वीकार न करने के लिए उन्होंने क्या बहाने बनाए?
3. परमेश्वर ने पहला निमंत्रण किसे दिया?
3. ''विवाह के वस्त्र'' से प्रभु का क्या तात्पर्य था?
5. जो लोग विवाह के वस्त्र को स्वीकार नहीं करते, उनके साथ क्या होता है?

पाठ 30

दस कुँवारियाँ

मत्ती 25:1-13

परिचय :

पिछले पाठ में हमने स्वर्ग के एक पहलू का अध्ययन किया था। आज हम, एक और दृष्टांत सीखेंगे, जो प्रभु ने कहा। उन्होंने स्वर्ग के राज्य की तुलना दस कुँवारियों से की, जो दूल्हे की प्रतीक्षा कर रही थीं।

पाठ :

दस कुँवारियाँ थीं जो दूल्हे से मिलने निकलीं। रात का समय था, इस कारण उन्होंने अपने साथ अपनी-अपनी मशालें लीं, परन्तु उनमें से पाँच मूर्ख थीं जिन्होंने अपनी मशालों के लिए तेल नहीं लिया। पाँच बुद्धिमान कुँवारियों ने अपनी मशालों के साथ तेल भी लिया। यदि मशाल में तेल नहीं होगा, तो रोशनी भी नहीं होगी। काफी देर हो गई और दूल्हा नहीं आया। प्रतीक्षा करते-करते वे सो गईं।

आधी रात को धूम मची कि दूल्हा आ रहा है। सब जाग गईं और अपनी अपनी मशालें ठीक करने लगीं। मूर्खों ने समझदारों से कहा, ''अपने तेल में से हमें भी दे दो, परन्तु समझदारों ने कहा, ''यह हमारे और तुम्हारे लिए पूरा नहीं पड़ेगा, इसलिए जाकर अपने लिए खरीद लाओ।''

मूर्ख कुँवारियाँ गईं और जब तक तेल लेकर वापस आईं, तब तक दूल्हा आ चुका था और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया।

मूर्ख कुँवारियों ने पुकारा, ''हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे।'' परन्तु उसने उत्तर दिया, ''मैं तुम्हें नहीं जानता।''

प्रभु यीशु ने यह दृष्टांत अपने शिष्यों को सिखाया, ताकि वे हमेशा तैयार रहें। कोई नहीं जानता कि मनुष्य का पुत्र कब आएगा।

बाइबल में हम कई जगह तेल से अभिषेक किए जाने की बात पढ़ते हैं। इसकी तुलना पवित्र आत्मा से की जा सकती है। जिस प्रकार राजा और याजकों का अभिषेक किया जाता था कि वे विशिष्ट बन सकें, उसी प्रकार हमें भी पवित्र आत्मा से भरपूर होना चाहिए। जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, तब पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो हम प्रभु के आगमन पर उनके साथ नहीं जा सकेंगे। हमें उन बुद्धिमान कुँवारियों की तरह, अपने स्वर्गीय दूल्हे के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। याद रखें, हम नहीं जानते कि प्रभु का आगमन कब होगा।

याद करें :

मत्ती 25:13 इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।

प्रश्न :

1. कुँवारियाँ किसकी प्रतीक्षा कर रही थीं?
2. उन्होंने अपने साथ क्या लिया?
3. दूल्हा कब आया?
4. दूल्हे के साथ सभी कुँवारियाँ क्यों नहीं जा सकीं?
5. इस दृष्टांत से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ 31

तोड़े

मत्ती 25:14-30

परिचय :

स्वर्ग के राज्य के विषय में आज हम एक और दृष्टांत सीखेंगे। क्या आपको विवाह के वस्त्र और तेल का अर्थ याद है? आज हम सीखेंगे कि कैसे प्रभु हमसे विश्वस्त सेवक होने की आशा रखते हैं।

पाठ :

प्रभु यीशु ने कहा, ''स्वर्ग के राज्य की तुलना उस मनुष्य से कर सकते हैं, जिसने परदेश जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उनको सौंप दी। उसने एक को पाँच तोड़े, दूसरे को दो और तीसरे को एक, तोड़ा दिया। (एक तोड़ा = 34 किलो)

पहला सेवक व्यापारी प्रवृत्ति का था इसलिए उसने जाकर पाँच तोड़े और कमाए। दूसरे वाले ने भी वही किया और दो और कमाए। तीसरा दास अलग ही स्वभाव का था। उसने मिट्टी खोदी और अपने स्वामी के रुपए छिपा दिए। बहुत दिनों के बाद उस स्वामी ने वापस आकर उन से हिसाब माँगा। पहले और दूसरे ने अपने मालिक को कमाए हुए तोड़े दिए, और उनके स्वामी ने उनसे कहा, ''धन्य, हे अच्छे और विश्वस्त दासों, तुम थोड़े में विश्वस्त रहे, मैं तुम्हें बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनंद में सहभागी हो।''

तीसरे दास ने आकर कहा, ''हे स्वामी, मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, तू जहाँ कहीं नहीं बोता वहाँ काटता है, और जहाँ नहीं छींटता, वहाँ से बटोरता है। इसलिए मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया, और वह यह रहा।''

स्वामी बहुत क्रोधित हुआ और उसने कहा, ''हे दुष्ट और आलसी दास, जब तू जानता था कि मैं कठोर हूँ, और जहाँ नहीं बोया वहाँ से

काटता हूँ, तो तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफों को देता, कि मुझे मेरा धन ब्याज समेत मिल जाता।'' उस स्वामी ने उस से वह तोड़ा वापस ले लिया और उसे दे दिया जिसके पास दस तोड़े थे, और उसे अपनी नौकरी से निकाल दिया।

प्रभु यीशु मसीह एक महत्वपूर्ण शिक्षा दे रहे थे। परमेश्वर हम में से हर एक को भिन्न-भिन्न वरदान अलग-अलग मात्रा में देते हैं, और फिर हमें उन वरदानों का परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए उपयोग करना चाहिए। यदि हम अवसरों का सदुपयोग करेंगे तो प्रभु से प्रतिफल पाएँगे। ध्यान दो, कि पहले दो दासों ने अपनी चतुराई के कारण नहीं, परन्तु अपने विश्वस्त होने के कारण प्रतिफल प्राप्त किया।

याद करें :

मत्ती 25:23 धन्य, हे अच्छे और विश्वस्त दास, तू थोड़े में विश्वस्त रहा, अपने स्वामी के आनंद में सहभागी हो।

प्रश्न :

1. स्वामी ने तोड़ों को कैसे बाँटा?
2. पहले दो दासों ने अपने तोड़ों का क्या किया?
3. तीसरे दास ने अपनी असफलता के लिए क्या बहाना बनाया?
4. परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
5. प्रभु यीशु ने यह दृष्टांत क्यों कहा?

पाठ 32

क्रूसीकरण

मत्ती 27

परिचय :

बच्चों, क्या तुम्हें याद है कि फसह के भोज के बारे में हमने क्या सीखा था? इस्राएलियों ने एक मेम्ना मार के उसका लोहू अपने दरवाजे की चौखट पर लगाया था। और नाश करने वाला दूत उस खून को देखकर इस्राएलियों के घरों को छोड़ गया था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रभु यीशु को परमेश्वर का मेम्ना कहा था, जिसका अर्थ है कि अपने लोगों को मृत्यु से बचाने के लिए प्रभु को मरना था। फसह के दिन प्रभु ने क्रूस पर अपना प्राण दिया।

पाठ :

प्रभु यीशु को रात के समय गतसमनी के बगीचे में बंदी बनाया गया; और रोमी राज्यपाल पिलातुस को सौंपा गया। यहूदी लोग किसी मनुष्य को मृत्यु दंड नहीं दे सकते थे परन्तु उन्होंने षडयंत्र करके पिलातुस के द्वारा प्रभु को मृत्यु दंड दिलवाया।

यहूदियों के द्वारा दोष लगाए जाने पर भी प्रभु यीशु ने कुछ उत्तर नहीं दिया। परन्तु जब पिलातुस ने पूछा, कि क्या तू यहूदियों का राजा है, तब प्रभु ने उत्तर दिया ''तू आप ही कह रहा है।'' पिलातुस ने प्रभु यीशु में कोई दोष नहीं पाया और तीन बार घोषणा की, ''मैं इस पुरुष में कोई दोष नहीं पाता।'' पिलातुस की पत्नी परेशान थी, उसने अपने पति को कहला भेजा ''तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना।''

रोमी लोगों का एक रिवाज था कि पर्व के समय लोगों के लिए किसी एक बन्दी को छोड़ दिया जाता था, और पिलातुस ने प्रभु यीशु को छोड़ दिया होता, क्योंकि वह फसह का पर्व था। परन्तु यहूदी लोग चिल्लाने लगे, कि इसे नहीं पर बरअब्बा को छोड़ दे।

बरअब्बा चोर और हत्यारा था इसलिए उसे छोड़ने के लिए पिलातुस अनिच्छुक था, परन्तु भीड़ के चिल्लाने के कारण उसने बरअब्बा को छोड़ दिया और प्रभु यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया।

सिपाहियों ने प्रभु यीशु को ले जाकर उसे लाल रंग का बागा पहिनाया, और काँटों का मुकुट उसके सिर पर रखा, और उसके दाहिने हाथ में सरकंड़ा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसका मज़ाक उड़ाने लगे और कहा, "हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!" फिर वे प्रभु को गुलगुता नाम जगह पर ले गए और एक लकड़ी के क्रूस पर प्रभु को कीलों से ठोंककर लटका दिया। उन्होंने प्रभु को पीने के लिए सिरका दिया परन्तु प्रभु ने नहीं पीया। सिपाहियों ने प्रभु के वस्त्रों को चिट्ठी डालकर बाँट लिया, जिसके बारे में पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी (भजन 22:18)।

पिलातुस ने प्रभु के क्रूस के ऊपर यह दोष-पत्र लगाया : "यह यहूदियों का राजा है।" आने-जाने वाले प्रभु की निंदा करके कहते थे, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से उतर आ।" यदि प्रभु चाहते तो वह ऐसा कर सकते थे, परन्तु वह क्रूस पर ही रहे, क्योंकि वह हमारे पापों के लिए मर कर हमें परमेश्वर के क्रोध से बचाना चाहते थे।

प्रभु क्रूस पर रहे, और दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा, जब प्रभु हमारे पापों के कारण कष्ट सह रह थे। प्रभु ने ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

प्रभु ने अत्यंत वेदना सही और फिर ऊँचे शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। प्रभु ने कष्ट उठाए और क्रूस की मृत्यु सही ताकि उनको उद्धारकर्ता मानकर हम अनंत जीवन प्राप्त कर सकें।

याद करें :

यशायाह 53:5 वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया, कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएँ।

प्रश्न :

1. हमारा फसह का मेम्ना कौन है?
2. प्रभु यीशु के विषय में किस ने कहा, ''मैं इस पुरुष में कोई दोष नहीं पाता''?
3. पिलातुस ने प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए क्यों सौंप दिया?
4. क्रूस पर लगे दोष-पत्र में क्या लिखा था?
5. प्रभु यीशु ने क्रूस की मृत्यु क्यों सही?

पाठ 33

हनन्याह और सफीरा

प्रेरितों के कार्य 5:1-11

परिचय :

अपना सब कुछ छोड़कर प्रभु यीशु के पीछे चलने वाले चेलों में से कुछ, प्रभु के पुनरुत्थान के बाद पहले की तरह ही मछली पकड़ने के अपने कार्य में लग गए (यूहन्ना 21)।

प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात् परमेश्वर पवित्र आत्मा विश्वासियों में आए और कलीसिया की स्थापना हुई। वे सब एक जैसा मन रखते थे और उनकी संपत्ति साझे की थी। जिनके पास बड़े घर या बहुत संपत्ति थी, वे सब कुछ प्रेरितों के पास लाते थे, जो हरेक को उनकी आवश्यकता के अनुसार बाँट देते थे। भविष्य की चिंता किसी को नहीं थी। वह अत्यंत अनुग्रह का समय था, परन्तु कलीसिया को धोखा देने वालों का क्या परिणाम हुआ, यह आज हम सीखेंगे।

पाठ :

उन दिनों में हनन्याह नामक एक पुरुष था, जिसने प्रभु को देने के लिए अपनी भूमि बेची, और उसमें से कुछ अपने लिए रख लिया। संभवत: उसने अपने भविष्य के लिए सोचा होगा। अत: उसने अपनी पत्नी के साथ षड्यंत्र रचा कि वे कलीसिया को उस धन का एक हिस्सा देकर बाकी अपने लिए रख लेंगे। फिर हनन्याह कलीसिया के लिए अलग किया हुआ धन लेकर आया और प्रेरितों को दे दिया।

प्रेरितों ने उसकी बात का विश्वास किया कि भूमि उतने ही दाम में बेची गई थी। परन्तु परमेश्वर ने पतरस पर सच्चाई प्रकट की। दुखी होकर पतरस ने पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया। पूरा धन उसी का था और वह उसे रख सकता था, और उससे कोई नहीं पूछता कि उसने वह धन कलीसिया को क्यों नहीं दिया। उसे मनुष्यों से और परमेश्वर से

झूठ बोलने की क्या आवश्यकता थी। तुरंत ही हनन्याह गिर गया और मर गया। जितनों ने यह देखा और सुना, सब बहुत डर गए। कुछ जवान आए और उसे ले जाकर गाड़ दिया।

तीन घंटे के बाद हनन्याह की पत्नी सफीरा वहाँ आई, परन्तु उसे पता नहीं था कि वहाँ क्या हुआ था। पतरस ने उससे पूछा, ''क्या तुम लोगों ने वह भूमि इतने में ही बेची थी?'' उसने कहा, ''हाँ, इतने में ही।'' पतरस के प्रश्न करने पर वह सच बोल सकती थी, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। यदि आप एक झूठ बोलेंगे तो उसे छिपाने के लिए आपको और झूठ बोलने पड़ेंगे।

पतरस ने सफीरा से कहा, ''तुम दोनों प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिए सहमत हुए? देखो द्वार पर वे लोग खड़े हैं जो तेरे पति को गाड़कर आए हैं और अब तुझे भी लेकर जाएंगे।'' सफीरा तुरंत गिर गई और मर गई। उन ही जवान लोगों ने उसे ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया।

हनन्याह और सफीरा ने केवल पतरस से बातचीत की थी, परन्तु उन्होंने पवित्र आत्मा के विरुद्ध कार्य किया था। दूसरों को धोखा देने वाले वास्तव में परमेश्वर को धोखा देते हैं और इसकी सज़ा उन्हें अवश्य मिलेगी। हो सकता है कि इस तरह तुरंत ही इतना भयंकर दण्ड न मिले, और लोग सोचते हैं कि वह बच जाएंगे। परन्तु परमेश्वर पाप को दण्ड देते हैं। अपनी बातचीत और कार्य में हमेशा इसे याद रखना।

याद करें :

इफिसियों 4:25. इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले।

प्रश्न :

1. हनन्याह ने अपनी भूमि बेचने का निर्णय क्यों लिया?
2. उसने भूमि बेचने से प्राप्त धन का क्या किया?
3. परमेश्वर ने हनन्याह और सफीरा को कैसे दण्ड दिया?
4. परमेश्वर ने उन दोनों को इतना भयंकर दण्ड क्यों दिया?
5. इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ 34

स्तिफनुस

प्रेरितों के कार्य अध्याय 6-7

परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि किस प्रकार कलीसिया बढ़ रही थी और विश्वासी लोग अपना सब कुछ मिल-बाँटकर रहते थे, और परमेश्वर के सच्चे गवाह थे। परन्तु प्रभु को मृत्यु दण्ड देने वाले अब इस नई कलीसिया के विरुद्ध कार्य कर रहे थे।

पाठ :

यहूदियों और यूनानियों में से लोगों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया और कलीसिया की बढ़ती संख्या के साथ उसकी समस्या भी बढ़ गई। यूनानियों ने शिकायत की, कि भोजन बाँटते समय उनकी विधवाओं का ध्यान नहीं रखा जाता। तब प्रेरितों ने सात योग्य, अच्छे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण पुरुषों को चुन लिया कि सबकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें। स्तिफनुस उन में से एक था। वह बहुत बुद्धिमान, योग्य, विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था।

प्रेरितों के प्रचार करने के द्वारा बहुत से लोगों ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया और कलीसिया से जुड़ने लगे। और याजकों का एक बड़ा समाज इस विश्वास में आ गया। परमेश्वर के वचन को फैलाने में स्तिफनुस बहुत क्रियाशील था। उसका विश्वास दृढ़ था, और वह बहुत से आश्चर्यकर्म करता था।

यहूदी जो प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करते थे, वे बहुत क्रोधित थे और कलीसिया को हानि पहुँचाना चाहते थे। उन्होंने कई लोगों को यह कहने के लिए उभारा, कि हमने इसको मूसा और परमेश्वर के विरोध मे निन्दा की बातें कहते सुना है। स्तिफनुस को महासभा में लाकर उस पर झूठे दोष लगाए गए। तब सभा में बैठे सब लोगों ने देखा कि उसका मुख स्वर्गदूत जैसा दिख रहा था।

महायाजक ने उससे पूछा, ''क्या ये बातें सच हैं?'' स्तिफनुस का उत्तर एक उपदेश के रूप में था। उसने अपने सुनने वालों को याद दिलाया कि कैसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दर्शन दिया, कैसे यहूदियों को मिस्र से छुड़ाया गया, और जो वायदे परमेश्वर ने उनको दिए, कैसे वे जंगल की यात्रा में निकले, और परमेश्वर ने उन्हें व्यवस्था दी। कैसे इस्राएलियों ने बार-बार परमेश्वर से दूर होकर मूर्तिपूजा की और सोने का बछड़ा बनाया और कैसे भविष्यद्वक्ताओं को सताया। फिर स्तिफनुस ने उससे कहा, ''तुम भी अपने बापदादों के समान ही हो। तुम ने भी उस प्रभु यीशु को मार डाला, जो तुम्हारे लिए ही भेजा गया था।''

ये बातें सुनकर वे लोग स्तिफनुस के विरोध में चढ़ आए। परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर कहा, ''देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।'' यह सुनकर वे क्रोध से भर गए और उस पर झपटे, और नगर से बाहर ले जाकर उसे पत्थरवाह किया। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नाम के जवान के पाँवों के पास रखे। स्तिफनुस घुटने टेककर अपनी मृत्यु तक अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करता रहा। क्या आप किसी के बारे में जानते हैं जिसने अपनी मृत्यु के समय अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की? पढ़ें लूका 23:34 ।

आज हमें ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है जो स्तिफनुस की तरह ही, प्रभु के लिए अपना प्राण भी देने को तैयार हो। हमें भी स्तिफनुस की तरह होना चाहिए।

याद करें :

भजन संहिता 34:5 जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की, उन्होंने ज्योति पाई, और उनका मुँह कभी काला न होने पाया।

प्रश्न :

1. यूनानी विश्वासियों की क्या शिकायत थी?
2. स्तिफनुस का कार्य क्या था?
3. स्तिफनुस को उस विशिष्ट कार्य के लिए क्यों चुना गया?
4. स्तिफनुस ने क्या दर्शन देखा?
5. स्तिफनुस की मृत्यु कैसे हुई?

पाठ 35

फिलिप्पुस और खोजा

प्रेरितों के काम 8:13, 26-40

परिचय :

स्तिफनुस की हत्या के बाद कलीसिया के विश्वासियों पर बड़ा अत्याचार होने लगा। प्रेरितों को छोड़कर अन्य सभी, यरूशलेम छोड़कर यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। स्तिफनुस के साथ चुने गए सात लोगों में एक फिलिप्पुस था। वह भी विश्वास में दृढ़ और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था।

पाठ :

फिलिप्पुस सामरिया गया और वहाँ परमेश्वर का वचन सुनाया। लोगों ने उसके विश्वास और आश्चर्यकर्मों के कारण प्रभु पर विश्वास करके बपतिस्मा लिया। एक दिन परमेश्वर के दूत ने उससे कहा कि वह यरूशलेम से गाज़ा की ओर जाने वाले मार्ग पर जाए। उसने तुरंत आज्ञा मानी, और वहाँ उसे कूशियों की रानी कंदाके का मंत्री और खजांची अपने रथ पर जाता हुआ मिला। वह एक खोज़ा था जो यरूशलेम से वापिस घर जा रहा था, और यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था। पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस को उसके पास भेजा और उसने खोजे को यशायाह की पुस्तक में से पढ़ते हुए सुना। फिलिप्पुस ने उस से पूछा, ''तू जो पढ़ रहा है, क्या उसे समझता भी है?''

खोजे ने उत्तर दिया, ''जब तक कोई मुझे न समझाए, तो मैं कैसे समझूँ? फिर उसने फिलिप्पुस से कहा कि वह उसे समझा दे। फिलिप्पुस उसके रथ पर चढ़ गया।

जो भाग खोजा पढ़ रहा था वह यह था : ''वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरने वालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला, उसका

प्राण पृथ्वी से उठा लिया गया।'' खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, ''भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कह रहा है? अपने या किसी दूसरे के विषय में?'' तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला और इसी शास्त्र से आरंभ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। परमेश्वर अद्‌भुत रीति से कार्य करते हैं। उस खोजे को ऐसे स्थान पर लाना, जहाँ फिलिप्पुस उसका इंतजार कर रहा था, और उसी समय उसका उस भाग से पढ़ना, जो प्रभु यीशु की मृत्यु का वर्णन करता है, जो उन्होंने मनुष्य के पापों के लिए सही। उस खोजे ने परमेश्वर के संदेश को समझा और उस पर विश्वास किया, और जब ऐसी जगह पहुँचे जहाँ पानी था, तब उसने बपतिस्मा लिया।

फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो बपतिस्मा ले सकता है।'' उसने उत्तर दिया, ''मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'' उसने रथ रोका और दोनों जल में उतर गए, और फिलिप्पुस ने खोजा को बपतिस्मा दिया। बपतिस्मा उन के लिए होता है जो प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानते हैं। परमेश्वर का वचन नहीं सिखाता, कि विश्वास किए बगैर ही कोई भी बपतिस्मा ले सकता है। पानी के अंदर जाकर बाहर आना मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रतीक है।

जब वे पानी से बाहर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजा आनंद करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया। देखो बच्चो, यदि आप वास्तव में सच्चाई जानना चाहते हैं तो परमेश्वर आपका मार्ग-दर्शन करेंगे। हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए कि अवसर मिलने पर सुसमाचार सुनाएं। बहुत सारे लोग हैं, जो सुसमाचार नहीं समझते और चाहते हैं कि कोई उन्हें समझाए।

बपतिस्मा लेना, प्रभु की आज्ञा का पालन करना है। इसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति इस सत्य पर विश्वास करता है कि प्रभु यीशु ने उसके लिए अपना प्राण दिया। प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा था कि सारी जातियों में लोगों को सुसमाचार सुनाओ और उन्हें चेले बनाओ। ऐसा करने के द्वारा हम प्रभु के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करते हैं। और हम भी आनंद करते हुए जीएंगे।

याद करें :

यूहन्ना 14:15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

प्रश्न :

1. फिलिप्पुस सामरिया क्यों गया?
2. वह खोजे से कहाँ पर मिला?
3. खोजा उसी स्थान पर कैसे पहुँचा जहाँ फिलिप्पुस था?
4. खोजा क्या पढ़ रहा था?
5. किसे बपतिस्मा लेना चाहिए?

पाठ 36

तरसुस का शाऊल

प्रेरितों के काम 9

परिचय :

क्या तुम्हें याद है बच्चों, कि जब स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जा रहा था तब गवाहों के कपड़े किस के पाँवों के पास रखे थे? वह शाऊल था, जो कलीसिया को नाश करना चाहता था।

पाठ :

शाऊल प्रभु के विश्वासियों को मार डालने की धुन में था। वह उनके विरुद्ध बात करता था, और सोचता था कि ऐसा करने से वह परमेश्वर को प्रसन्न कर रहा है।

वह महायाजक के पास गया और उससे इस अधिकार की चिट्ठी ली, कि आराधनालयों में और जहाँ भी वे थे, उन्हें बाँधकर यरूशलेम ले आए। इस उद्देश्य से जब वह दमिश्क जा रहा था तब अचानक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?''

शाऊल भयभीत हो गया, उसने पूछा ''हे प्रभु तू कौन है?'' प्रभु ने कहा, ''मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।'' देखो बच्चों, प्रभु के लोगों को सताना स्वयं प्रभु को सताने की तरह है।

शाऊल ने पूछा, ''हे प्रभु, आप मुझ से क्या चाहते हैं, कि मैं करूं?'' प्रभु ने उत्तर दिया कि उठकर नगर में जा और जो तुझे करना है, वह तुझे बता दिया जाएगा। जो लोग उसके साथ थे उन्होंने रोशनी देखी और घबरा गए। शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। वे उसका हाथ पकड़कर दमिश्क ले गए, जहाँ वह तीन दिन तक बिना खाए-पीए रहा।

दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, ''हे हनन्याह, उठकर उस गली मे जा जो 'सीधी' कहलाती है,

और यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुसवासी को पूछ। वह प्रार्थना कर रहा है।''

हनन्याह ने कहा, ''हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इसने पवित्र लोगों के साथ बड़ी बुराइयाँ की हैं, और प्रधान याजकों की ओर से तेरे लोगों को बाँधने का अधिकार लेकर आया है।''

प्रभु ने उससे कहा, ''उठकर चला जा, क्योंकि वह अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने, मेरा नाम प्रगट करने के लिए मेरा चुना हुआ है। हनन्याह उठकर गया और शाऊल पर अपना हाथ रखकर बोला, ''हे भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।''

तुरंत उसकी आँखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा, और उठकर बपतिस्मा लिया। फिर भोजन करके बल पाया।

प्रभु के प्रति शाऊल के मन परिवर्तन की यह घटना है। यह एक असाधारण घटना थी क्योंकि उसके लिए परमेश्वर का विशेष उद्देश्य था। ''परिवर्तन'' का अर्थ है ''मुड़ जाना''। शाऊल प्रभु यीशु के विरुद्ध कार्य कर रहा था, अब वह उस से मुड़ गया और प्रभु यीशु के लिए कार्य करने लगा। अपने बाकी जीवन में उसने प्रभु के बारे में प्रचार किया और प्रभु के लिए शिष्य बनाए। उसका रोमी नाम पौलुस है।

हम में से हर एक से प्रभु कहते हैं, ''मेरे पास आओ!'' हम सब अपने ही मार्गों पर चलते हैं, परन्तु हमें प्रभु यीशु के पास आने के लिए मुड़ जाना होगा।

याद करें :

फिलिप्पियों 3:7 परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।

प्रश्न :

1. अपने परिवर्तन से पहले शाऊल क्या करता था?
2. शाऊल दमिश्क क्यों गया था?
3. दमिश्क जाने के रास्ते में उसके साथ क्या हुआ?
4. शाऊल की सहायता करने के लिए परमेश्वर ने किसे भेजा?
5. दृष्टि पाने पर शाऊल ने क्या किया?

पाठ 37

कुरनेलियुस

प्रेरितों के काम 10

परिचय :

परमेश्वर के वचन में संसार के सभी राष्ट्र दो भागों में बँटे हैं। इस्राएली लोग, जिन्हें यहूदी या परमेश्वर के लोग कहा जाता है, वे याकूब के द्वारा इब्राहीम के वंशज हैं। अन्य सभी लोग अन्यजाति कहलाते हैं। इस्राएली परमेश्वर के द्वारा चुने गए थे, कि परमेश्वर की महिमा करें और आशीष प्राप्त करें। परन्तु बार-बार मूर्तिपूजा और अनाज्ञाकारिता के कारण उन्होंने अपनी आशीषें खो दीं। प्रभु यीशु इस संसार में समस्त मनुष्यजाति को बचाने आए। जिन्होंने प्रभु पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया वे एक नया समूह बन गए और वे परमेश्वर की कलीसिया कहलाते हैं। तथापि, अनेक यहूदी विश्वास करते थे कि प्रभु यीशु केवल उन्हीं को बचाने आए थे, अत: उन्हें यह सिखाना आवश्यक था कि उद्धार सबके लिए है।

पाठ :

रोमी पलटन में कुरनेलियुस नाम का एक सूबेदार था जो कैसरिया में रहता था। वह और उसका परिवार बहुत भक्त और प्रार्थना करने तथा दान देने वाला था। एक दोपहर उसने दर्शन में परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को देखा। उसने डरकर कहा, ''हे प्रभु क्या है?''

स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान परमेश्वर ने स्वीकार किए हैं। अब किसी को याफा में भेजकर शमौन पतरस को बुलवा ले, जो समुद्र के किनारे चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन के घर में रहता है। वह तुम्हें बताएगा कि क्या करना है।''

कुरनेलियुस ने तीन मनुष्यों को याफा भेजा, जो लगभग चालीस मील की दूरी पर था। अगले दिन याफा में पतरस ने भी एक दर्शन देखा।

जब वह छत पर प्रार्थना कर रहा था, तो उसे भूख लगी। उसने देखा कि आकाश खुल गया और एक पात्र बड़ी चादर के समान पृथ्वी पर उतर रहा है जिसमें सब प्रकार के चौपाए, और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। और उसने एक शब्द सुना, ''हे पतरस, उठ, मार और खा।''

पतरस ने घबराकर उत्तर दिया, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खायी है।'' देखो बच्चों, यहूदी लोग अपने भोजन का विशेष ध्यान रखते थे। मूसा के द्वारा अशुद्ध जानवरों की सूची यहूदियों को दी गई थी, और वे उन जानवरों को कभी नहीं खाते थे।

स्वर्ग से फिर उसे शब्द सुनाई दिया, ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।'' तीन बार ऐसा ही हुआ, तब तुरंत वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया।

जो दर्शन पतरस ने देखा, उसके बारे में वह दुविधा में ही था, कि कुरनेलियुस के द्वारा भेजे गए तीनों पुरुष वहाँ पहुँचकर शिमौन पतरस के बारे में पूछने लगे। परमेश्वर ने पतरस से कहा, ''उठकर नीचे जा, मैंने ही उन्हें भेजा है।'' पतरस ने आज्ञा मानी और नीचे गया, और उसे पता चला कि उन लोगों को कुरनेलियुस ने उसके पास भेजा है। अगली सुबह पतरस और कुछ भाई लोग कैसरिया से आए पुरुषों के साथ चल दिए।

कुरनेलियुस, उसका परिवार और उसके मित्र उन लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुरनेलियुस ने उससे भेंट की और उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, ''खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूँ।'' फिर कुरनेलियुस ने पतरस को बताया कि एक स्वर्गदूत ने उसे दर्शन देकर कहा कि याफा से शिमौन पतरस को बुलवा ले जो आकर तुम्हें उद्धार का सुसमाचार सुनाएगा। यह सुनकर पतरस को उस दर्शन का अर्थ समझ में आ गया जो उसने स्वयं देखा था, कि परमेश्वर हर जाति और राष्ट्र के लोगों को स्वीकार करते हैं।

पतरस ने अपने सुननेवालों को बताया कि प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग से

इस पृथ्वी पर आए थे, उन्होंने कष्ट सहे और फिर क्रूस की मृत्यु भी, ताकि वे मनुष्य जाति को उनके पापों से बचा सकें। और फिर तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो गए। पतरस ने उन्हें यह भी बताया, कि प्रभु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी है, कि यह सुसमाचार सब लोगों को सुनाया जाए, ताकि प्रभु यीशु के नाम से मनुष्यजाति अपने पापों से छुटकारा प्राप्त कर सके।

जब पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया, बिल्कुल वैसे ही जैसे आरंभ में यहूदियों पर आया था।

फिर पतरस ने उन्हें बपतिस्मा दिया और सब लोग बड़े आनंदित हुए।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम स्वर्ग इसलिए नहीं जा सकते क्योंकि हम किसी विशेष समूह के सदस्य हैं, परन्तु हम तब स्वर्ग जा सकेंगे जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानेंगे। प्रभु के पास आकर सच्चे हृदय से उन पर विश्वास करने वालों को प्रभु यीशु मसीह स्वीकार करते हैं।

याद करें :

रोमियों 1:16 मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।

प्रश्न :

1. कुरनेलियुस कौन था?
2. कुरनेलियुस ने दर्शन में क्या देखा?
3. पतरस ने कहाँ पर दर्शन देखा?
4. पतरस ने दर्शन में क्या देखा?
5. परमेश्वर उस दर्शन के द्वारा पतरस को क्या सिखाना चाहते थे?
6. हमें पवित्र आत्मा कब प्राप्त होता है?

पाठ 38

लुदिया

प्रेरितों के काम 16:11-15

परिचय :

पौलुस ने दूर-दूर तक यात्राएँ करके परमेश्वर का वचन सुनाने में पहल की। अपनी पहली यात्रा में वे बरनबास के साथ एशिया के शहरों में गए और प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाया। अपनी दूसरी यात्रा में पौलुस पहले सीलास को अपने साथ ले गए और फिर तीमुथियुस को, और फिर वे त्रोआस गए, जहाँ लूका उनके साथ हो लिया। वहाँ पवित्र आत्मा ने उन से कहा कि वे मकिदुनिया (यूनान) जाएँ। अतः उन्होंने समुद्र पार किया और फिलिप्पी पहुँचे, जो मकिदुनिया का एक महत्वपूर्ण शहर था, और वहाँ वे कुछ समय तक रहे।

पाठ :

फिलिप्पी की यह यात्रा बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि यह पहला अवसर था जब प्रभु यीशु का संदेश यूरोप में सुनाया जा रहा था। परन्तु वहाँ अधिक यहूदी लोग नहीं थे, इस कारण उस स्थान पर यहूदी आराधनालय भी नहीं था। ये चारों प्रचारक शहर से बाहर नदी के किनारे पहुँचे, जहाँ कुछ भक्त स्त्रियाँ प्रार्थना करने के लिए इकट्ठी हुई थीं, और उनको सुसमाचार सुनाया।

उनमें लुदिया नामक थुआतीरा नगर की, बैंजनी कपड़े बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला और उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया। फिर वह उन लोगों को अपने घर ले गई। लुदिया यूरोप की पहली विश्वासी थी, परन्तु बहुतों ने बाद में प्रभु पर विश्वास किया और शीघ्र ही फिलिप्पी में एक कलीसिया की स्थापना हुई।

लुदिया के विषय में इन बातों पर ध्यान दें–

* वह कुरनेलियुस की तरह ही परमेश्वर की आराधक थी।

* वह प्रार्थना के स्थान पर नियमित जाती थी।

* प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार पर उसने ध्यान दिया और विश्वास किया। इसका अर्थ यह हुआ कि उसने अपना हृदय प्रभु के लिए खोला।

* फिर उसने अपना घर प्रभु के दासों के लिए खोला और अतिथि-सत्कार किया।

परमेश्वर उनसे प्रेम करते हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और जो परमेश्वर की खोज में रहते हैं वे उनको पा लेते हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रभु को ढूँढ़ें और अपने हृदय में उनको स्वीकार करें और फिर दूसरों को भी प्रभु के पास लाएं।

याद करें :

यूहन्ना 1:12 जितनों ने प्रभु को ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया।

प्रश्न :

1. वे चार लोग कौन थे जो फिलिप्पी गए?
2. पौलुस मकिदुनिया क्यों गए?
3. पौलुस कहाँ पर थे जब उन्होंने मकिदुनिया जाने का निर्णय लिया?
4. हमारी जानकारी के अनुसार, यूरोप में सबसे पहले किसने प्रभु पर विश्वास किया?
5. लुदिया के जीवन से हम क्या सीखते हैं?

पाठ 39

फिलिप्पी का दारोगा

प्रेरितों के काम 16:19-40

परिचय :

प्रेरितों के काम अध्याय 16 में लेखक लूका ने तीन लोगों के बारे में लिखा है, जिनको परमेश्वर ने छुआ। पहले लुदिया को, फिर एक दासी को, जिसमें दुष्टात्मा थी, और प्रभु यीशु के नाम से उसे पौलुस ने चंगा किया। दासी में से दुष्टात्मा निकालने के कारण जिन लोगों की कमाई बंद हो गई, उन्होंने पौलुस और सीलास के विरुद्ध शिकायत की। और दोनों को हाकिमों ने बेंत लगवाकर बंदीगृह में डाल दिया। तीसरा व्यक्ति दारोगा था जिसे परमेश्वर ने छुआ। आज हम इसी रोमी अफसर के बारे में सीखेंगे।

पाठ :

दारोगा को आज्ञा मिली थी, कि पौलुस और सीलास को चौकसी से रखे, इसलिए उसने उन्हें भीतरी कोठरी में रखा और उनके पाँव लकड़ी में ठोंक दिए। इस कष्टप्रद स्थिति में भी उन्होंने परमेश्वर की स्तुति में भजन गाए और प्रार्थना की, और अन्य कैदी उनकी सुन रहे थे।

अचानक एक बड़ा भूकम्प आया और बंदीगृह की नींव हिल गई, और तुरंत सब द्वार खुल गए और सबके बंधन खुल गए।

दारोगा जाग गया और बंदीगृह के द्वार खुले देखकर सोचा कि कैदी भाग गए हैं, और अब उसे उसकी सजा मिलेगी। उसने अपने आप को मार डालने के लिए तलवार खींची, परन्तु पौलुस ने जोर से पुकार कर कहा, ''अपने आप को कुछ हानि मत पहुँचा, हम सब यहीं हैं।'' दारोगा ने दीया मंगवाया और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा। फिर उन्हें बाहर लाकर उनसे पूछा, ''हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?'' उन्होंने कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू

और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' पौलुस ने दारोगा और उसके परिवार को सुसमाचार सुनाया, उन्होंने विश्वास किया और रात को ही बपतिस्मा लिया। दारोगा ने उनके घाव धोए और उन्हें भोजन परोसा और सबने आनंद मनाया।

सुबह हाकिमों ने दारोगा को कहला भेजा कि उनको छोड़ दो।

परमेश्वर ने पौलुस और सीलास को पिटने और बंदीगृह में जाने दिया, ताकि फिलिप्पी के दारोगा तक सुसमाचार पहुँच सके। जब वह कार्य हो गया तो उन्हें छोड़ दिया गया। पौलुस और सीलास प्रभु के लिए कष्ट उठाने के लिए तैयार थे, और अपने कष्ट के समय भी उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए, और परमेश्वर ने उनके द्वारा अपने लिए और प्राणों को बचाया।

याद करें :

प्रेरितों के काम 4:12 स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

प्रश्न :

1. पौलुस और सीलास को बंदीगृह में क्यों डाला गया?
2. दारोगा ने क्या किया कि कैदी भाग न सकें?
3. पौलुस और सीलास रात को गीत गाकर परमेश्वर की स्तुति क्यों कर रहे थे?
4. परमेश्वर ने क्या किया?
5. दारोगा और उसका परिवार क्यों आनंदित हुआ?

पाठ 40

तीमुथियुस

प्रेरितों के काम 6:1-15; 2 तीमुथियुस 1:3-5; 3:15

परिचय :

दिरबे और लुस्त्रा एशिया के वह शहर थे, जहाँ पौलुस और सीलास अपनी पहली सुसमाचार प्रचार करने की यात्रा के दौरान गए। अपनी दूसरी यात्रा में पौलुस सीलास को अपने साथ इन शहरों में ले गए, जहाँ एक जवान चेला रहता था जिसका नाम था तीमुथियुस। तीमुथियुस के पिता यूनानी थे और माता यहूदिनी थी।

पाठ :

तीमुथियुस की माता यूनीके और नानी लोइस में महान और सच्चा विश्वास था, और उन्होंने तीमुथियुस को बचपन से ही परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी थी। लुस्त्रा और इकुनियुम के विश्वासी तीमुथियुस के बारे में केवल अच्छी गवाही देते थे। अतः पौलुस ने उसे अपने साथ ले जाने का निर्णय किया। सभी जानते थे कि तीमुथियुस का पिता यूनानी है, इसलिए उसने यहूदी रिवाज के अनुसार तीमुथियुस का खतना करवाया ताकि यहूदी लोग उसे स्वीकार कर सकें। फिर वह पौलुस और सीलास के साथ त्रोआस और फिलिप्पी और अन्य जगहों पर गया।

थिस्सलुनीकियों के यहूदियों ने प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं किया और उनके लिए समस्याएँ खड़ी कीं। इस कारण भाइयों ने उन्हें बिरिया भेज दिया जहाँ पर यहूदी सुनने की चाह रखते थे। जब थिस्सलुनीकिया के यहूदियों को इस बात की जानकारी मिली, तब वे बिरिया पहुँच गए और विश्वासियों के लिए परेशानी खड़ी की। पौलुस फिर अथेने चले गए और सीलास और तीमुथियुस वहीं रुके रहे।

पौलुस ने तीमुथियुस के नाम दो पत्रियाँ लिखीं, जिनके द्वारा हमें पता चलता है कि तीमुथियुस सुमाचार प्रचार करने के कार्य में कितना विश्वस्त

था। उसने भी अपने विश्वास के कारण कष्ट उठाए और बंदीगृह में डाला गया। (इब्रानियों 13:23)।

पौलुस अपने पुत्र की तरह तीमुथियुस से प्रेम करता था और उसके लिए बहुत प्रार्थना करता था। उसने तीमुथियुस को सिखाया, कि कलीसिया का नेतृत्व किस प्रकार किया जाना चाहिए। पौलुस के द्वारा तीमुथियुस को लिखी गई, पत्रियाँ आज हर एक सुसमाचार प्रचारक को पढ़नी चाहिए।

इस वर्ष का यह आखिरी पाठ है, और हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि हमें भी बचपन से ही परमेश्वर का वचन सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है।

याद करें :

2 तीमुथियुस 2:1 हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवंत हो जा।

प्रश्न :

1. तीमुथियुस के माता-पिता कौन थे?
2. तीमुथियुस को परमेश्वर का वचन किसने सिखाया?
3. पौलुस तीमुथियुस को अपने साथ क्यों ले गए?
4. तीमुथियुस ने प्रभु के लिए क्या कार्य किया?